ट्रेड यूनियनें और क्रांति-IV

सं. रा. अमरीका में ट्रेड यूनियन आंदोलन

(पहली किश्त)

प्रस्तुत लेख संयुक्त राज्य अमरीका के ट्रेड यूनियन आंदोलन की दो किश्तों में पहला है। इसमें संयुक्त राज्य अमरीका में पहली क्रांति (1776) से लेकर 1945 तक के समय में ट्रेड यूनियन आंदोलन के उद्‌भव और विकास को दिया गया है।

हालांकि संयुक्त राज्य अमरीका के मजदूर आंदोलन की शुरुआत बहुत पहले हो गयी थी और वहां पर मार्क्सवाद मार्क्स-एंगेल्स के जमाने से ही पहुंच गया था। 1848 की महाद्वीपीय यूरोपीय क्रांतियों के असफल हो जाने के बाद, अप्रवासी यूरोपवासी विशेष तौर पर जर्मन मजदूर तरह-तरह के समाजवादी विचार अपने साथ लाये थे। फिर भी, मार्क्सवाद पर आधारित पार्टी सिर्फ अक्टूबर क्रांति के बाद ही अस्तित्व में आ सकी।

कम्युनिस्ट आंदोलन के अस्तित्व में आने के बाद भी वह अपनी तमाम अंतर्निहित कमजोरियों से ग्रस्त रहा। दूसरे संयुक्त राज्य अमरीका की विशिष्ट स्थितियों के चलते वहां का ट्रेड यूनियन आंदोलन मुख्यतः पूंजीवादी विचारों पर आधारित था। वहां की ट्रेड यूनियनों के अभिजात मजदूर नेता जल्द ही पूंजी के चाकर बन गये थे।

प्रस्तुत लेख की पहली किश्त में संयुक्त राज्य अमरीका के शानदार मजदूर आंदोलन और उनके विश्वासघाती अभिजात नेताओं की चर्चा की गई है।

इस लेख के तथ्य और सामग्री विलियम जेड. फोस्टर की पुस्तक "History of communist party of USA और उनके लेखों के संग्रह "American trade Unionism" तथा फिलिप एस.फोनर के History of labor Movement in the United States के प्रथम और दूसरे खण्ड से ली गयी है।

संयुक्त राज्य अमरीका में पूंजीवाद का विकास ब्रिटिश उपनिवेशवाद से क्रांतिकारी मुक्ति और गणतंत्र की स्थापना के बाद तेज गति से हुआ। इसके साथ ही इसने अपनी राष्ट्रीय सीमाओं का विस्तार किया इससे उद्योग और कृषि के विकास को गति मिली।

1776 में हुई अमरीकी क्रांति से आधुनिक पूंजीवादी संयुक्त राज्य अमरीका का इतिहास शुरू होता है। संयुक्त राज्य अमरीका के क्रांतिकारी युद्ध को व्यापारियों, बड़े भू-स्वामियों, छोटे किसानों और गोरे व नीग्रो मेहनतकशों ने मिलकर लड़ा था। इस क्रांति ने राष्ट्रीय स्वाधीनता हासिल की और स्वतंत्र संयुक्त राज्य अमरीका अस्तित्व में आया। इसने इंग्लैण्ड द्वारा उत्पादक शक्तियों पर खड़ी की गयी औपनिवेशिक बाधाओं को चकनाचूर कर दिया। इसने राष्ट्रीय बाजार को बंधनमुक्त कर दिया तथा व्यापार और उद्योग के तेजी से विकास का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इसने छोटे किसानों और मजदूरों को, जो अधिकांशतः दस्तकार थे, सीमित जनवादी अधिकार दिये लेकिन इसने नीग्रो लोगों को दासता से मुक्त नहीं किया। इसने मूलवासियों (इंडियंस) को उनकी जमीनों से खदेड़ने और उनका समूल विनाश करने के पहले के प्रयासों में तेजी ला दी।

अमरीकी क्रांति का दूरगामी अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव भी पड़ा। इसने फ्रांसीसी लोगों को अपने सामंती अत्याचारियों से मुक्ति हासिल करने में प्रेरणा का काम किया। इसने लातिन अमरीकी देशों को स्पेन और पुर्तगाल की औपनिवेशिक दासता से मुक्ति में प्रेरणास्रोत का काम किया। इसी तरह इसने दुनिया भर में सामंतवाद के विरुद्ध संघर्ष में पूंजीपति वर्ग की लड़ाई को, जिसे जनवादी जनसमुदाय का समर्थन प्राप्त था, गति देने में महत्वपूर्ण शक्ति का काम किया।

अमरीकी क्रांति में हिस्सा लेने वाले अलग-अलग वर्गों के लिए क्रांति के लक्ष्य अलग-अलग थे। व्यवसायियों के लिए इसका अर्थ सत्ता में प्रभुत्वशाली स्थिति में रहते हुए बाकी आबादी के शोषण का निर्बाध अवसर मिलना था। बड़े भू-स्वामियों के लिए इसका मतलब गुलामी प्रथा को जारी रखने और उसको विस्तारित करने के नये अवसर थे। किसानों के लिए इसका अर्थ सार्वजनिक जमीनों पर निर्बाध पहुंच के नये मौके थे। मजदूरों के लिए इसने सार्विक मताधिकार, और ज्यादा जनवादी स्वतंत्रतायें और इस नये देश में सम्पदा के और बड़े हिस्से का वायदा किया था। गुलाम नीग्रो लोगों के लिए इसने गुलामी की यंत्रणा से आजादी की नयी उम्मीदें जगायी थीं।

इस विजयी क्रांति के बाद के दशकों में संयुक्त राज्य अमरीका का आर्थिक विकास असाधारण गति से बढ़ा। इसमें कई अनकूल कारकों की भूमिका थी। जिसमें प्रमुख थे व्यापक प्राकृतिक संसाधनों की मौजूदगी, सामंती आर्थिक और राजनीतिक अवशेषों की सापेक्ष नामौजूदगी, श्रम शक्ति की कमी, अप्रवासी लोगों की निरन्तर आवक और एक सरकार के अंतर्गत इलाके का भारी पैमाने पर विस्तार। एक अन्य अत्यंत निर्णायक कारक यह था कि नयी जमीनों का व्यापक क्षेत्र था जो पूंजीवादी विकास के लिए तैयार था जिसने दशकों तक देश की आर्थिक और राजनीतिक वृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसने मजदूरों की विचारधारा को तय करने के साथ-साथ मजदूर आंदोलन की प्रगति और रूपों को भी तय किया। यह उद्योगपतियों और बड़े भूस्वामियों के दो संघर्षरत प्रतिद्वन्द्वी वर्गों के बीच टकराहट का मुख्य बिंदु था।

ट्रेड यूनियन आंदोलन की शुरुआत

संयुक्त राज्य अमरीका में जितनी तेजी के साथ औद्योगिक विकास हो रहा था उतनी ही तेजी के साथ मजदूर वर्ग बढ़ रहा था। क्रांति के पहले के दिनों में ज्यादातर स्वतंत्र मजदूर वर्ग का हिस्सा स्थायी कुशल कारीगरों का था। ये कुशल कारीगर यूरोपीय गिल्ड प्रथा - उस्ताद कारीगर और उसके अधीनस्थ मजदूर - की परिपाटी पर थे। जब घर आधारित उत्पादन की जगह मिलों में उत्पादन होने लगा तब विशेषतौर पर 1812 के युद्ध के बाद फैक्टरी प्रणाली के विकास से अमरीकी मजदूरों की हैसियत में बुनियादी बदलाव आ गया। राष्ट्रीय बाजार के विकास ने फैक्टरियों का तेजी से विस्तार किया और मजदूरों की संख्या तेज रफ्तार से बढ़ने लगी। इसने उस्ताद कारीगर द्वारा चंद कुशल मजदूरों को ही रोजगार देने की प्रणाली को समाप्त कर दिया। नये पूंजीपति मजदूरों का अत्यंत निर्मम शोषण करने में लग गये। वे महिलाओं और बच्चों को काम में लगाने लगे और पुराने किस्म के कुशल मजदूरों की जगह मशीनों का इस्तेमाल करने लगे।

1819 में आये आर्थिक संकट के पहले विभिन्न पेशों और शहरों में कई यूनियनें अस्तित्व में आ गयी थीं। लेकिन इस औद्योगिक संकट के समय ये शुरूवाती यूनियनें खतम हो गयीं। जैसे ही औद्योगिक स्थिति में सुधार होना शुरू हुआ ये यूनियनें फिर से नयी ऊर्जा के साथ खड़ी होने लगीं। 1820 के दशक में नये पैदा हुए मजदूर आंदोलन की कई महत्वपूर्ण हड़तालें हुई। 1836 तक बड़े समुद्रतटीय शहरों में 13 यूनियन केन्द्र अस्तित्व में आ चुके थे। 1833-37 के दौरान 173 हड़तालों का रिकार्ड मिलता है, जो मुख्यतया बेहतर मजदूरी और काम के छोटे दिन को लेकर थीं। 1834 में राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन का गठन किया गया, यह आम मजदूर संघ का पहला प्रयास था। यह तीन साल तक चला।

1837 की आर्थिक तबाही ने फिर से ट्रेड यूनियनों को नष्ट कर दिया। इसके बावजूद, 1820 और 1830 के दशकों के बड़े संघर्षों के दूरगामी नतीजे मिल चुके थे। 10 घण्टे काम के दिन के अलावा, मजदूरों द्वारा कर्ज को न अदा करने पर जेल के प्रावधान को समाप्त कर दिया गया। उत्तर में साझी स्कूल प्रणाली लागू की गयी और उत्तर के गोरे लोगों के लिए ही मतदान के लिए सम्पत्ति सम्बंधी प्रावधान को व्यवहारतः समाप्त कर दिया गया।

जल्द ही मजदूरों को समझ में आने लगा कि महज मताधिकार का मिलना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि उन्हें इसके उपयोग करने के लिए संगठित होने की आवश्यकता है। उन्होंने मजदूरों की राजनीतिक पार्टी की आवश्यकता को महसूस करना शुरू कर दिया। 1828-34 के दौरान 61 स्थानीय मजदूर पार्टियों की स्थापना हो चुकी थी। मजदूरों के 50 अखबार इस दौरान अस्तित्व में आ चुके थे। लेकिन कुछ ही वर्षों के भीतर ये पार्टियां भी विलीन हो गयीं।

हालांकि ये स्थानीय मजदूर पार्टियां एक स्थायी राष्ट्रीय संगठन में विकसित नहीं हो पायीं, फिर भी इन्होंने राष्ट्रीय पैमाने पर राजनीतिक संघर्षों के नये चरण की जमीन तैयार कर दी थी।

संयुक्त राज्य अमरीका के शुरुवाती मजदूर आंदोलन पर जेफरसन के विचारों का काफी प्रभाव था। उनकी लड़ाई मौजूदा सामाजिक व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के मकसद से नहीं बल्कि 1776 के वायदों को हासिल करने की तरफ केन्द्रित थी। आजादी के घोषणापत्र का व्यापक प्रभाव उस समय की विभिन्न यूनियनों के संविधानों और बयानों में देखा जा सकता है।

लेकिन तीक्ष्ण पूंजीवादी शोषण ने जल्द ही मजदूर वर्ग के दृष्टिकोण में भिन्न वर्गीय सारतत्व लाना शुरू कर दिया। उनकी बातों में पूंजीवाद-विरोधी अभिव्यक्तियां आने लगीं जो मजदूर वर्ग की मुक्ति की भावना को व्यक्त करती थीं।

1837 के संकट ने और इसके बाद के 12 वर्षों के ठहराव ने मजदूरों और प्रगतिशील बुद्धिजीवियों की चेतना को बहुत ज्यादा प्रभावित किया। अब वे पूंजीवाद की सीमाओं से बाहर सोचने के लिए बाध्य हुए। इस तरह, कल्पनावादी प्रयोगों के युग की शुरूवात हुई। हालांकि काल्पनिक योजनाओं का उद्गम स्थल मुख्यतया यूरोप था लेकिन अमरीका में कुछ सालों के भीतर ही कम से कम 200 ऐसी परियोजनायें लागू की गयीं। इन काल्पनिक योजनाओं को सबसे मुखर रूप से लागू करने वाले राबर्ट ओवेन, चार्ल्स फूरिये और इटिने काबे थे।

संयुक्त राज्य अमरीका के गृहयुद्ध के पूर्व काल में कई कल्पनावादी बस्तियां और आंदोलन अस्तित्व में आये और कुछ समय में खत्म हो गये क्योंकि वे समाज और इसके विकास व पतन के बारे में भौतिक स्थितियों की वास्तविकता की सही समझदारी पर आधारित नहीं थे। वे मनोगत इच्छाओं से पैदा हुइ मनचाही योजनाओं के अनुसार खड़े किये गये थे। ये छोटी-छोटी बस्तियों के टापू नकली तौर पर खड़े किये गये थे जो व्यापक पूंजीवादी सागर के बीच नहीं टिक सकते थे। विभिन्न काल्पनिक समाजवादियों के समर्थक मुख्यतया गोरे किसानों और शहरी मध्यवर्गीय तत्वों से आये थे।

संयुक्त राज्य अमरीका में मार्क्सवाद के आने के पहले वर्ग-संघर्ष की यही स्थिति थी। मजदूर ज्यादा से ज्यादा जोश के साथ अपने शोषकों के साथ आर्थिक, राजनीतिक और विचारधारात्मक तौर पर टकरा रहे थे। लेकिन वे अपनी इस लड़ाई में, पूंजीवाद की जवानी के कारण, अभी वर्ग चेतना, ऊर्जादायी शक्ति और स्पष्ट दिशा से वंचित थे।

यह वैज्ञानिक समाजवाद को अपनाकर ही किया जा सकता था।

संयुक्त राज्य अमरीका में वैज्ञानिक समाजवाद के सिद्धान्तों का परिचय अमरीकी गृहयुद्ध के पहले वाले दशक में हो चुका था। इस समय तक अमरीकी पूंजीवाद दुनिया में चौथे स्थान पर पहुंच चुका था। मजदूर वर्ग संख्या की दृष्टि से और ज्यादा मजबूत हो चुका था। वर्ग सम्बंध और ज्यादा उन्नत हो चुके थे। अप्रवासी मजदूरों की संख्या, विशेषतौर पर कुशल मजदूरों और खेत मजदूरों के बढ़ने की रफ्तार बहुत ज्यादा हो गयी थी। मजदूर वर्ग दो गहरे आर्थिक संकटों की मार पहले ही सह चुका था। वह अपने मालिकों के अत्यन्त शोषण के विरुद्ध जगह-जगह ट्रेड यूनियनों और स्थानीय मजदूर पार्टियों का गठन कर चुका था। इसके अतिरिक्त वह तीखे वर्ग-संघर्ष

के जरिये कई महत्वपूर्ण रियायतें जीत चुका था। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड के चार्टिस्ट आंदोलन और फ्रांस, जर्मनी व आयरलैण्ड के क्रांतिकारी संघर्षों से उसे लगातार गति मिल रही थी। ऐसी ही स्थिति में, 1848 की यूरोपीय क्रांतियों की पराजय के बाद राजनीतिक अप्रवासियों की भारी तादाद संयुक्त राज्य अमरीका आयी वे अपने साथ मार्क्सवादी विचारों को भी ले आयी। इन यूरोपीय अप्रवासियों में जर्मन भी थे। जर्मन अप्रवासी मुख्यतया औद्योगिक केन्द्रों में बस गये। वे कुशल मैकेनिक थे। वे जल्द ही ट्रेड यूनियन आंदोलन के विकास में ज्यादा मजबूत प्रभाव डालने लगे। वे अपने को समाजवादी और क्रांतिकारी समझते थे। उनके अंदर भी कई विचारधारात्मक मतभेद थे, जो वे अपने देश से लाये थे।

इनमें विल्हेम वाइटलिंग जैसे लोग भी थे जो काल्पनिक व वैज्ञानिक समाजवाद के बीच की अवस्थिति अपनाये हुए थे। इनमें अराजकतावादियों और काल्पनिक समाजवादियों के कई ग्रुप थे। लेकिन इनमें सबसे ज्यादा मार्क्सवादी अवस्थिति पर खड़े जोसेफ वेडेमेयर थे जिन्होंने जर्मनी की 1848 की क्रांति में हिस्सा लिया था। 1851 में अमरीका आने के बाद वे अमरीकी मार्क्सवादियों के नेता के तौर पर उभरे।

जून, 1852 में न्यूयार्क में प्रोलेतारियन लीग नाम से गठित अमरीकी जमीन पर पहला मार्क्सवादी संगठन बना। 1852 में वेडेमेयर ने पहला मार्क्सवादी अखबार 'द रिवोल्यूशन' निकालना शुरू किया। इसी के साथ, 1853 में जर्मनभाषी मजदूरों का अमेरिकन लेबर यूनियन का गठन न्यूयार्क में किया गया। इसकी पहलकदमी से न्यूयार्क शहर में 40 पेशे के प्रतिनिधियों ने जनरल ट्रेड यूनियन की शुरूवात की। इसका प्रभाव अंग्रेजी भाषी मजदूरों पर अन्य शहरों में पड़ा। फलस्वरूप 1853 में वाशिंगटन में वर्किंग मेंस नेशनल एसोसिएशन और 1857 में अमेरिकन लेबर यूनियन को पुनर्गठित करके जनरल वर्कर्स लीग का नाम दिया गया। हालांकि जल्द ही ये दोनों यूनियनें समाप्त हो गयी।

देश में छाये गम्भीर आर्थिक संकट ने 1857 में मजदूरों के संघर्षों को तेजी से बदल दिया। मंदी की मार सर्वाधिक नये अप्रवासी मजदूरों पर पड़ी। जगह-जगह अभूतपूर्व दायरे में और सघनता से बेरोजगारों के संघर्ष फूट पड़े। इन संघर्षों में तालमेल बिठाने के लिए न्यूयार्क में कम्युनिस्ट क्लब की स्थापना हुई।

शुरूवाती मार्क्सवादियों वेडेमेयर, सोर्जे और अन्य ने विचारधारात्मक मोर्चे पर उन "वामपंथियों" के विरुद्ध संघर्ष किया जो राजनीतिक गतिविधियों को बेकार की कार्यवाई मानते थे और जो यह मानते थे कि समाजवाद षड्यंत्रकारी कार्यवाइयों से लाया जा सकता था। इसके साथ ही उन्होंने दक्षिणपंथियों के विरुद्ध संघर्ष किया जो यह मानते थे कि कृषि ही सभी समस्याओं की रामबाण औषधि है और जो मजदूरों को भ्रष्ट पूंजीवादी राजनीतिज्ञों से बांध कर रखना चाहते थे तथा संयुक्त राज्य अमरीका में मार्क्सवाद की भूमिका से इंकार करते थे।

शुरुवाती मार्क्सवादियों ने मजदूरों को खुद अपने हित में राजनीतिक तौर पर कार्यवाई करने की आवश्यकता का प्रचार किया। उन्होंने मजदूर आंदोलन को अपने समाजवादी विचारों से परिचित कराया। उन्होंने मजदूरों को मालिकों से हर स्तर पर लड़ने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने राजनीतिक और आर्थिक संघर्षों को अलग करने की गलत धारणा का पर्दाफाश किया। उन्होंने यह दिखाया कि प्रत्येक आर्थिक संघर्ष एक राजनीतिक संघर्ष था जैसे कि 10 घंटे काम के दिन का संघर्ष था जिसे मजदूर वर्ग ने एक वर्ग के बतौर शासक वर्ग के खिलाफ लड़ा था।

गृह युद्ध (1861-65) से पहले वाले दशक में विकसित मार्क्सवादी केवल थोड़े से ही थे, लेकिन अपनी तमाम कमजोरियों के बावजूद उन्होंने नये अमरीकी मजदूर आंदोलन में भारी योगदान दिया। वे ट्रेड यूनियनों के पुरोधा थे। वे मजदूरों के प्रत्येक संघर्ष में अगली कतार में रहकर लड़े। उन्होंने स्थानीय और अप्रवासी मजदूरों के बीच के अवरोधों को तोड़ने में मदद की। वे नीग्रो दासता के विरुद्ध लड़ने वाले जुझारू लड़ाकू थे। उन्होंने ठोस व प्रभावशाली मजदूरों के अखबारों को खड़ा किया। सर्वोपरि वे अमरीका में संगठित मार्क्सवादियों की पहली कोर गठित करने वाले थे। लेकिन वे मूल वासी (इंडियन) कबीलों के सवाल को मजदूर आंदोलन से जोड़ने के महत्व को नहीं समझ सके और इसमें वे असफल रहे।

चूंकि संयुक्त राज्य अमरीका में पूंजीवाद का विकास बहुत तेज रफ्तार से हो रहा था, इसलिए उत्तर के पूंजीपतियों और दक्षिण के बड़े भू-स्वामियों (प्लाण्टरों) के बीच राज्यसत्ता पर प्रभुत्व के लिए संघर्ष तेज होता जा रहा था। संयुक्त राज्य अमरीका का क्षेत्रीय विस्तार भी बहुत तेजी से हो रहा था। दक्षिण के भूस्वामी गुलामी प्रथा को चलाना चाहते थे। अभी तक राज्यसत्ता में उनका बोलबाला था। लेकिन उत्तर के पूंजीपतियों को गुलामी प्रथा स्वीकार्य नहीं थी। 1850 के दशक के दौरान भूस्वामियों (प्लाण्टरों) का डेमोक्रेटिक पार्टी के जरिये कांग्रेस के दोनों सदनों पर, राष्ट्रपति पर और उच्चतम न्यायालय के 9 जजों में से 7 पर नियंत्रण था। इससे वर्ग तनाव बढ़ता जा रहा था और संयुक्त राज्य अमरीका गृहयुद्ध की ओर जा रहा था।

दास प्रथा के उन्मूलन के लिए उन्मूलनकारी आंदोलन तेज होता जा रहा था। इस उन्मूलनकारी आंदोलन के सर्वाधिक शक्तिशाली नेता और लड़ाकू शक्ति फ्रेडरिक डगलस, वेन्डेल फिलिप्स इत्यादि थे जिन्होंने हिचकिचाहट भरे पूंजीपतियों और यहां तक कि समूची जनता को गुलामी प्रथा के विरुद्ध लड़ने को तैयार करने में निर्णायक भूमिका निभायी।

1860 में हुआ चुनाव उस समय तक के संयुक्त राज्य अमरीका के इतिहास में सबसे कठिन लड़ा गया चुनाव था। अब्राहम लिंकन रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार थे। लिंकन मौजूद क्षेत्रों तक दासप्रथा को सीमित रखने के राजनैतिक प्लेटफार्म पर खड़े हुए थे। लिंकन चुनाव जीत गये। लिंकन के पक्ष में मार्क्सवादियों ने प्रचार किया और जर्मन वासी अमरीकियों के बीच तथा अप्रवासी मजदूरों के बीच समर्थन जुटाने में उनका प्रचार निर्णायक था।

लिंकन की विजय के बाद दक्षिण के भू-स्वामियों (प्लाण्टरों) ने हथियार उठा लिये। यह दूसरी अमरीकी क्रांति थी जो संवैधानिक मंजिल से अब सैनिक कार्रवाई में पहुंच गयी थी। गृह युद्ध शुरु हो गया जो 1865 तक चला। इस गृह युद्ध में उत्तर के पूंजीपतियों ने दक्षिणी भाग के बड़े भू-स्वामियों की राजनीतिक सत्ता के प्रभुत्व को समाप्त कर दिया और खुद अपने लिए सत्ता हथिया ली। दास प्रथा, जो पूंजीवाद के विकास में आर्थिक तौर पर बाधा हो चुकी थी, तहस-नहस हो गयी। 40 लाख दासों को औपचारिक तौर पर आजाद कर दिया गया। समूचे अमरीका में औद्योगिकीकरण की गति और मजदूर वर्ग में वृद्धि की रफ्तार बहुत तेज हो गयी।

इस युद्ध में नीग्रो लोग और मजदूर वर्ग के हिस्से कंधे से कंधा मिलाकर बहादुरी के साथ लड़े। गुलाम नीग्रो लोगों के साथ-साथ कम्युनिस्ट क्लबों के लोग और जर्मन वर्कर्स लीग के आधे से ज्यादा सदस्य सशस्त्र बलों में शामिल होकर लड़े।

इस गृहयुद्ध में खुद कार्ल मार्क्स ने अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। मार्क्स ने अपने शक्तिशाली प्रभाव को पहले इण्टरनेशनल के नेता के बतौर इंग्लैण्ड और महाद्वीपीय यूरोप के मजदूरों को उत्तरी लोगों के मकसद के प्रति समर्थन जुटाने में प्रदर्शित किया। लिंकन ने पहले इण्टरनेशनल को सहायता देने के लिए धन्यवाद दिया। मजदूर वर्ग से मिला अंतर्राष्ट्रीय समर्थन एक मददगार कारक था जिससे यह "विश्व ऐतिहासिक प्रगतिशील और क्रांतिकारी युद्ध" जैसा कि लेनिन ने इसे कहा है, को सफलतापूर्वक समाप्ति की ओर ले जाया गया।

गृहयुद्ध के दशक में पूंजीवाद के व्यापक विस्तार, औद्योगिक मजदूरों की संख्या में बढ़ोत्तरी और मजदूरों के शोषण के घनीभूत होने से भी ट्रेड यूनियन आंदोलन में तेजी से बढ़ोत्तरी हुई। 1866 में बाल्टीमोर में नेशनल लेबर यूनियन का गठन किया गया। नेशनल लेबर यूनियन मार्क्सवादी संगठन नहीं था। हालांकि मजदूर वर्ग की इस बड़ी अग्रगामी छलांग में मार्क्सवादी प्रभाव की निश्चित तौर पर भूमिका थी। नेशनल लेबर यूनियन ने अपने अस्तित्व के छः सालों के दौरान कई महत्वपूर्ण संघर्षों का नेतृत्व किया और काफी हद तक सही मजदूर नीति अपनायी। इसकी मुख्य गतिविधियों में से एक आठ घंटे काम के दिन का अभियान था। नेशनल लेबर यूनियन बेरोजगारों के हितों के लिए भी सक्रिय था और यह दुनिया का पहला ट्रेड यूनियन आंदोलन था जिसने महिलाओं और पुरुषों के समान काम के लिए समान वेतन की हिमायत की। इसने 1868 मे सिल्विस को सहायक सचिव और महिलाओं का संगठनकर्ता नियुक्त किया।

नेशनल लेबर यूनियन ने अपने छः वर्षों के संक्षिप्त जीवन के बावजूद अमरीकी मजदूर आंदोलन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। यह 1830 के दशक के नेशनल ट्रेड्स यूनियन का उत्तराधिकारी था, जबकि आगे बनने वाले नाइट्स ऑफ लेबर और अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर का पूर्ववर्ती था। यह नीग्रो मजदूरों को संगठित करने में, महिलाओं के और अन्य मजदूरों के अधिकारों की रक्षा में, स्वतंत्र राजनीतिक कार्रवाइयों के संगठन में और मजदूर वर्ग की अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता के विकास में अग्रणी था।

पहले इंटरनेशनल में व्याप्त विश्वव्यापी दिक्कतें इसके अमरीकी हिस्से में भी कुछ बदलावों के साथ व्याप्त थीं। संयुक्त राज्य अमरीका में मजदूर आंदोलन को अंतर्राष्ट्रीय मजदूर संघ, मजदूर वर्ग और समाजवादी आंदोलन की राजनीतिक अपरिपक्वता के चलते तमाम किस्म के सुधारवादियों, विशुद्ध ट्रेड यूनियनवादियों, लासालपंथियों और बाकुनिनपंथी अराजकतावादियों द्वारा लगातार कमजोर किया गया था। लेकिन संयुक्त राज्य अमरीका में अंतर्राष्ट्रीय मजदूर संघ ने अपने अस्तित्व के 12 वर्षों के दौरान (1864-76) समाजवादी आंदोलन के विकास में काफी योगदान दिया।

1876 में ही मार्क्सवादियों और लासालपंथियों ने मिलकर फिलाडेल्फिया में एक सम्मेलन करके अमरीका की कामगार पार्टी का गठन किया। इस पार्टी में लासालपंथियों ने राष्ट्रीय कमेटी में अपना बहुमत बना लिया था। इन दोनों धड़ों के बीच विभिन्न मसलों पर टकराहटें दिन-प्रति-दिन बढ़ती जा रही थीं।

1873 के गम्भीर आर्थिक संकट का फायदा उठाते हुए पूंजीपति चौतरफा मजदूरी में कटौती कर रहे थे। इसका जवाब मजदूरों ने हड़तालों की ऐसी तीखी शृंखला से दिया जैसा कि इसके पहले कभी नहीं देखा गया था। ये हड़तालें मुख्यतया स्वतःस्फूर्त थी क्योंकि अधिकांश ट्रेड यूनियनें आर्थिक संकट के दौरान बिखर गयी थीं। 1874-75 में लम्बी और मजबूती से लड़ी गई लड़ाइयों में कपड़ा और खदान उद्योगों के मजदूरों की लड़ाइयां प्रमुख थीं। 1875 की 'लम्बी हड़ताल' में पेन्सिलवेनिया के कोयला क्षेत्र के 10 आयरिश अप्रवासी मजदूरों को फांसी तथा दूसरे 24 मजदूरों को जेल की सजा दी गयी। इस घटना को "मोल्ली मैग्यूरेर्स" का नाम दिया गया।

लेकिन इस काल की सबसे महत्वपूर्ण हड़ताल 1877 की बड़ी रेल हड़ताल थी। वरजीनिया से शुरू होकर यह जंगल की आग की तरह कई रेल लाइनों तक एक तट से दूसरे तट तक फैल गयी। पहली बार संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपने को राष्ट्रीय हड़ताल की चपेट में पाया। अंततोगत्वा यह हड़ताल कुचली गयी। इस हड़ताल से मजदूरों ने मजबूत यूनियनों और संगठित राजनीतिक कार्यवाइयों की आवश्यकता को तल्खी के साथ महसूस किया। इस हड़ताल में लगभग गृहयुद्ध की स्थिति हो गयी थी और इसने समूचे देश की आबादी के सभी हिस्सों को हिलाकर रख दिया था।

कामगार पार्टी के लिए व्यापक जनसमुदाय को संघर्षों में नेतृत्व देने का यह एक नया और बड़ा अनुभव था। यह पार्टी को मजदूरों से अलग करने वाली संकीर्ण बाधाओं के विरुद्ध शक्तिशाली प्रहार था। मार्क्स और एंगेल्स ने इस महान जन संघर्ष का स्वागत किया था। 1877 में पार्टी के सम्मेलन में इसने अपना नाम बदल कर 'उत्तरी अमरीका की समाजवादी लेबर पार्टी' कर लिया। इसने 1876 और 1878 के बीच 24 अखबार स्थापित किये थे।

1877 की बड़ी हड़ताल के बाद मजदूरों पर सरकार द्वारा दमन के बर्बर तरीके के विरोधस्वरूप घटनायें राजनीतिक कार्यवाइयों की ओर मजदूरों को ले गयीं। 1878 तक किसानों-मजदूरों का संश्रय कायम हो गया। इस संश्रय में व्यापारियों और बड़े फार्मरों का प्रभुत्व था। समाजवादी मजदूर पार्टी पर लासालवादी मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों के प्रभुत्व के चलते यह खालिस अवसरवाद की ओर

गयी। ट्रेड यूनियनों की भंयकर पराजय के चलते इसने राजनीतिक कार्यवाइयों की ओर जाने का अर्थ महज संसदीय राजनीतिक कार्यवाइयों तक सीमित रहने तक कर दिया। इस भंयकर अवसरवाद के विरुद्ध मार्क्सवादियों और ट्रेड यूनियनवादियों का संघर्ष तीव्र हो गया। ये आर्थिक और राजनीतिक कार्यवाइयों को मिलाकर चलाने के लिए जोर दे रहे थे। इससे पार्टी में आंतरिक संकट गहराता गया और अगले पांच वर्षों के दौरान समाजवादी लेबर पार्टी के जीवन के लिए ही खतरा पैदा हो गया। इसी बीच अराजकतावादी-संघाधिपत्यवादी खतरा भी मंडराने लगा।

अराजकतावादी संघाधिपत्यवाद का उद्भव कई कारणों से हुआ था। इनमें से निम्न थे: (क) सरकार द्वारा हड़तालों को कुचलने के लिए अत्याधिक हिंसा अपनाने से मजदूरों के बीच यह विचार पैदा हुआ कि ताकत का जवाब ताकत से देंगे (ख) मजदूरों के चुनाव में उम्मीदवार खड़े करने से वंचित करने का अर्थ यह था कि मजदूर वर्ग की सभी राजनीतिक कार्यवाइयों के प्रति नकार का भाव पैदा होना। (ग) यह तथ्य कि लाखों-लाख अप्रवासी मजदूरों को कोई मताधिकार नहीं था, इसने भी संगठित राजनीतिक कार्यवाइयों के प्रति उदासीनता पैदा करने का काम किया। (घ) समाजवादी लेबर पार्टी के सुधारवादी नेतृत्व की अवसरवादी नीतियों से भी जुझारू मजदूरों का इससे मोहभंग और दूर होना (च) मजदूर वर्ग पर निम्न-पूंजीवादी क्रांतिकारिता का प्रभाव और (छ) यूरोपीय अराजकतावादी विचारों के आने से इस आंदोलन को विशिष्ट विचारधारात्मक सारतत्व मिलना।

1875 में ही शिकागो के जर्मन मजदूरों ने अपनी रक्षा के लिए सशस्त्र ग्रुप बना लिया था। यह प्रवृत्ति 1877 की बड़ी हड़तालों में सरकार द्वारा की गई हिंसा के परिणामस्वरूप तेजी से फैली। 1881 में "सीधी कार्रवाई" के समर्थक मुख्यतया अलबर्ट आर.पार्सन्स और अगस्त स्पाइस के समर्थक शिकागो में मिले और क्रांतिकारी समाजवादी लेबर पार्टी को संगठित किया। 1883 में जोहान्न मोस्ट, जो जर्मन अराजकतावादी था, के साथ मिलकर क्रांतिकारी समाजवादी लेबर पार्टी का संयुक्त सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन ने अंतर्राष्ट्रीय कामगार जनता का संघ (International Working people's Association) का गठन किया। इसमें शिकागो ग्रुप ज्यादा संघाधिपत्यवादी था।

अवसरवादियों के नेतृत्व में समाजवादी लेबर पार्टी को अंतर्राष्ट्रीय कामगार जनता के संघ के जुझारू संगठन का सामना करना पड़ा और समाजवादी लेबरपार्टी का नेतृत्व इनके तेवर व जुझारूपन के सामने टिक नहीं सका।

1873 से शुरू हुए आर्थिक संकट से जब अमरीकी उद्योग उबरने लगा तो 1879 की शुरूवात में ट्रेड यूनियनवाद तेजी के साथ फैलने लगा। 1878 में समाजवादियों के प्रयासों से अंतर्राष्ट्रीय लेबर यूनियन का गठन किया गया। अंतर्राष्ट्रीय लेबर यूनियन ने आठ घण्टे काम के दिन के सवाल पर बहुत जोर दिया और मजदूर वर्ग के अंततोगत्वा मुक्ति की हिमायत की। इसने मुख्यतया टेक्सटाइल मजदूरों की यूनियन में अपने को केन्द्रित किया।

लेकिन इससे बड़ा प्रयास नाइट्स ऑफ लेबर (knights of labour) के संगठन में हुआ। नाइट्स ऑफ लेबर का गठन तो दिसम्बर, 1869 में हो चुका था, लेकिन राष्ट्रीय लेबर यूनियन की गिरावट के बाद नाइट्स ऑफ लेबर तेजी से बढ़ा। इसने अपना राष्ट्रीय सम्मेलन 1878 में किया। 1877 की बड़ी हड़तालों के बाद यह संगठन तेजी से बढ़ा।

नाइट्स ऑफ लेबर में मार्क्सवाद, लासालवाद और विशुद्ध ट्रेड यूनियनवाद की रूझानें मौजूद थीं। इसने अपने लक्ष्य में लासालवाद के मकसद रखे थे। यह शिल्पगत यूनियनवाद के विरुद्ध था। यह समूचे मजदूर वर्ग के व्यापक संगठन बनाने का उद्देश्य रखता था। नाइट्स ऑफ लेबर ने अपनी स्थानीय मिलीजुली पांतों में सभी शिल्पों के मजदूरों को स्वीकार किया। इसकी कतारों में नीग्रो मजदूर भी थे और इसके सदस्यों में 10 प्रतिशत महिलायें थीं। इसकी स्थानीय सदस्यता में 25 प्रतिशत पेशेवर और छोटे व्यापारी भी थे।

नाइट्स ऑफ लेबर के उभार का काल समाजवादी लेबर पार्टी के भीतर आंतरिक संकट के काल से जुड़ा हुआ था। इस पार्टी के दक्षिणपंथी नेतृत्व के कमजोर होते जाने के साथ साथ संकीर्णतावाद के दीमक द्वारा संगठन को चाटते जाने और अराजकतावादी संघाधिपत्यवादियों के विरुद्ध संघर्ष के तीखे होते जाने के कारण नाइट्स ऑफ लेबर तेजी से बढ़ा।

नाइट्स ऑफ लेबर के उभार के साथ ही एक नया, प्रतिद्वंद्वी यूनियन आंदोलन भी विकसित हुआ। यह राष्ट्रीय शिल्पगत यूनियनों पर आधारित था। ऐसी शिल्पगत यूनियनें नाइट्स ऑफ लेबर में अपना कोई संतोषजनक स्थान नहीं पा सकती थीं। इन कुछ संगठनों ने गृहयुद्ध में हिस्सा लिया था। वे नाइट्स ऑफ लेबर के मिश्रित रूप, इसके निरंकुश नेतृत्व, सीधे ट्रेड यूनियन सवालों से इतर इसके अन्य मुख्य सरोकार और उनके विशिष्ट शिल्पगत हितों को इसके द्वारा नजरअंदाज किये जाने के विरुद्ध थे। इस प्रकार 1881 में इन्होंने संयुक्त राज्य अमरीका और कनाडा के संगठित ट्रेडों और मजदूर यूनियनों के फेडरेशन का गठन किया। यही संगठन आगे चलकर अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर (A F L) के रूप में विकसित हुआ। इसके नेता सैम्युअल गोम्पर्स थे।

गृह युद्ध के बाद वर्ग संघर्ष लगातार विकसित हो रहा था। यह जुझारूपन के साथ नयी ऊंचाई में आठ घंटे काम के दिन के संघर्ष में तेजी से बढ़ा। फेडरेशन ने 1884 के अपने शिकागो सम्मेलन में यह प्रस्ताव पारित किया कि 1 मई, 1886 से आठ घंटे काम का दिन होगा। फेडरेशन ने अपनी ताकत इस आंदोलन में झोंक दी। जबकि नाइट्स ऑफ लेबर के नेतृत्व ने इस हड़ताल का विरोध किया।

आम हड़ताल शिकागो में केन्द्रित थी। यहां पारसंस और शिलिंग के नेतृत्व में केन्द्रीय लेबर यूनियन सक्रिय थी। राष्ट्रीय स्तर पर यह हड़ताल बहुत सफल थी। इसमें नाइट्स ऑफ लेबर के सदस्यों सहित 3.5 लाख मजदूरों ने हिस्सा लिया। हे मार्केट की घटना को मालिकों द्वारा अंजाम देने के बावजूद इसने ट्रेड यूनियन संगठन की व्यापक लहर के लिए रास्ता प्रशस्त किया। इसने आधुनिक ट्रेड यूनियन आंदोलन के लिए आधारशिला रख दी।

1886 की हड़ताल ने स्पष्टतया यह तय कर दिया कि फेडरेशन ही राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन सेन्टर होगा। इसने नाइट्स ऑफ लेबर को पृष्ठभूमि में धकेल दिया। दिसम्बर, 1886 में फेडरेशन ने अपना नाम बदलकर 'अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर' कर लिया।

अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर अपने शुरूवाती काल में कतारों के दबाव में कुछ जुझारूपन दिखलाया। लेकिन 1890 के दशक में अमरीकी साम्राज्यवाद के विकास के साथ वे मालिकों द्वारा उनके लिए तय की गयी भूमिका में जल्दी ही पतित हो गये। वे 'पूंजी के मजदूर लेफ्टीनेंट' हो गये। उन्होंने अपने को कुशल मजदूरों पर आधारित किया और अकुशल मजदूरों को छोड़ दिया। उन्होंने कुख्यात गोम्पर्स मशीन निर्मित करने की शुरूवात कर दी थी जो तब से मजदूर वर्ग को आगे बढ़ने के रास्ते में बड़ी बाधा रही है। वे यह सब करने में इसलिए समर्थ हो सके क्योंकि अमरीकी उद्योगों के तेज गति से बढ़ने के चलते अन्य देशों की तुलना में वहां के मजदूरों का जीवन स्तर ऊंचा रहा है जो अमरीकी मजदूर वर्ग के तेजी से क्रांतिकारीकरण करने के रास्ते में बाधास्वरूप रहा है।

आठ घंटे काम के दिन के संघर्ष के बाद कई शहरों में मजदूरों ने पार्टियों को संगठित करना शुरू कर दिया। इन पार्टियों में समाजवादी सक्रिय थे। लेकिन समाजवादी लेबर पार्टी में आंतरिक भ्रम और मतभेद बढ़ते गये। इस पार्टी में स्थापना के समय से ही दक्षिणपंथी प्रभुत्वशाली स्थिति में थे। यह पार्टी मूलतया जर्मन पार्टी बनी रही। 1889 में समाजवादी लेबर पार्टी में मतभेद फूट की कगार तक पहुंच चुके थे। 1890 में डेनियल डी लियोन समाजवादी लेबर पार्टी में और मजदूर आंदोलन में आ गये थे। वे जल्द ही समाजवादी लेबर पार्टी में एक शक्ति बन गये।

डे लियोन ने पूर्ववर्ती अराजकतावादी संघाधिपत्यवादियों से यह संघाधिपत्यवादी धारणा ली थी कि औद्योगिक यूनियनें भविष्य के समाज का आधार होंगी। डे लियोन के अनुसार, यह औद्योगिक संगठन दमनात्मक शक्तियों के साथ राज्यसत्ता नहीं होगी बल्कि महज प्रशासनिक मशीन होगी। डे लियोन के अनुसार,"औद्योगिक यूनियनवाद बनने की प्रक्रिया में समाजवादी गणतंत्र होगा और एक बार यह लक्ष्य हासिल हो जाय तो यह कार्यरत समाजवादी गणतंत्र होगा।" (डे लियोन, "औद्योगिक यूनियनवाद")

डे लियोन संयुक्त राज्य अमेरिका में क्रांति के सवाल पर बहुत दूर था। वह मजदूर वर्ग द्वारा समाज का नियंत्रण अपने हाथ में लेने की ऐसी अवधारणा पेश कर रहा था जिसमें पूंजीपति वर्ग वस्तुतः कोई प्रतिरोध नहीं करेगा। उसने पार्टी के सामने अपने अवसरवादी विचारों की इस तरह से व्याख्या की कि वह चुनावों में शांतिपूर्ण तरीके से विजयी होगी और तब पार्टी के राजनीतिक क्रियाकलाप समाप्त हो जायेंगे और यह तुरंत भंग हो जायेगी। इसके बाद औद्योगिक यूनियनें उद्योगों पर कब्जा कर लेंगी, पूंजीपतियों को निकाल बाहर कर देंगी। पूंजीपति वर्ग औद्योगिक यूनियनों का प्रतिरोध करने की स्थिति में नहीं रहेगा, हालांकि महज प्रशासनिक ढांचा उनका ध्यान रहेगा। (डे लियोन, समाज का समाजवादी पुनर्गठन से)। डे लियोन की पार्टी की नेतृत्वकारी भूमिका की अवधारणा नहीं थी। उसका समूचा जोर क्रांति से पहले, उसके दौरान, और क्रांति के बाद में औद्योगिक यूनियनों पर था। न ही उसकी पार्टी जनवाद और अनुशासन पर कोई अवधारणा थी। वह किसानों, मध्यम वर्ग और नीग्रो अवाम को मजदूर वर्ग का स्वाभाविक संश्रयकारी नहीं मानता था। वह ट्रस्टों का विरोध करने वालों का विरोधी था।

ऐसे संकीर्णतावादी रूझानों के साथ-साथ वह सिद्धान्ततः मजदूर वर्ग की तात्कालिक मांगों के विरुद्ध था। उसने समाजवादी लेबर पार्टी की एकमात्र मांग तक कार्यक्रम को सीमित कर दिया और वह था "पूंजीपति वर्ग द्वारा बिना शर्त समर्पण।" डे लियोनवाद का रुझान पार्टी को एक अलग-थलग, संकीर्ण, कठमुल्ला तंत्र में तब्दील कर देता था। वह उसे एक ऐसे तंत्र में तब्दील कर देता था जो उसे अमूर्तता में समाजवाद का प्रचारक बना देती थी।

ऐसे समय में जब संयुक्त राज्य अमरीका के बड़े पूंजीपति अभिजात मजदूरों की श्रेणी तैयार करके मजदूर वर्ग की लड़ने की क्षमता को कमजोर कर रहे थे और अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर के अवसरवादी नेता पूंजीपतियों की इस आम योजना का साथ दे रहे थे। ए.एफ.एल. के नेता समाजवाद विरोधी, वर्ग सहयोगी, समाजवादी लेबर पार्टी का विरोध, शिल्पगत यूनियनवाद,नीग्रो और अकुशल मजदूरों को अपने से बाहर रखने और हड़तालों से गद्दारी की राह चल रहे थे। तब डे लियोन गोम्पर्स के नौकरशाहों का विरोध करने के बावजूद अपने अलगाववादी-संकीर्णतावादी रुख के कारण ए.एफ.एल. के लिए काम आसान कर देने में मदद पहुंचा रहे थे। उन्होंने यह गलत धारणा पेश की कि समाजवादियों को पुरानी ट्रेड यूनियनों से अपने को अलग कर लेना चाहिए और घोषित तौर पर समाजवादी मजदूर आंदोलन खड़ा करने पर जोर देना चाहिए।

डे लियोन ने ए.एफ.एल. में फूट डालने की कोशिश की और उसमें असफल रहे। इसके बाद उन्होंने नाइट्स ऑफ लेबर में फूट डालने की कोशिश की और उसमें असफल होने के बाद उन्होंने मनमाने तरीके से और बिना पार्टी की औपचारिक स्वीकृति के समाजवादी ट्रेड्स और मजदूर संश्रय (Socialist trades and labour alliance) नामक संगठन बनाया। इस संगठन के बनने के तरीके और समाजवादी लेबर पार्टी की नीतियों के विरुद्ध इस पार्टी में फूट पड़ गयी। इस फूट के बाद यह पार्टी पश्चगामी प्रतिक्रियावादी पंथ में तब्दील हो गयी।

बीसवीं सदी की शुरूवात में अमरीकी पूंजीवाद साम्राज्यवाद की मंजिल में पहुंच चुका था। इसके उद्योगों ने उच्च स्तर का एकाधिकार ग्रहण कर लिया था। इसकी वित्तीय व्यवस्था पर चंद बड़े बैंकों का प्रभुत्व स्थापित हो गया था। औद्योगिक और बैकिंग पूंजी मिलकर वित्तीय पूंजी का अल्पतंत्र बन चुके थे जो राज्य पर अपना प्रभुत्व रखते थे। यह स्पेनी-अमरीकी युद्ध (1898, क्यूबा पर कब्जे की लड़ाई) के साथ अपने साम्राज्य का विस्तार कर रहा था। जैफरसन, जैक्सन और लिंकन के समय का कृषि प्रधान देश अब मार्गनों और रॉकफेलरों के एकाधिकारी, साम्राज्यवादी देश में बदल गया था।

घमण्डी पूंजीपतियों ने मजदूरों के प्रति दमन की दोहरी नीति अपनायी। उसने एक तरफ, मजदूर संगठन और संघर्ष के प्रत्येक प्रयास को हिंसात्मक तरीके से कुचलने की और दूसरी तरफ, कुशल मजदूरों को मजदूरी में छोटी-छोटी रियायतें देने की नीति अपनायी जिससे कि व्यापक मजदूर वर्ग के संघर्षों को रोका जा सके और उनकी मजदूरी को नीचे रखा जा सके। इस काल की अनेक खूनी हड़तालें और ए.एफ.एल. के नेताओं में व्याप्त भ्रष्टाचार जीते-जागते प्रमाण थे जो यह बताते थे कि किस उत्साह के साथ पूंजीपति मजदूरों को कुचलने की इस नीति का अनुसरण कर रहे थे।

1900 तक ए.एफ.एल.का सर्वोच्च नेतृत्व पूंजीवाद का प्रबल समर्थक हो चुका था, राजनीतिक तौर पर और व्यक्तिगत तौर पर पूरी तरह भ्रष्ट हो चुका था। उन्होंने मालिकों की नीति को अपने आधार के तौर पर स्वीकार कर लिया था और जैसे साम्राज्यवादी युग विकसित हुआ यह अधिकाधिक स्पष्ट होता गया। अर्द्ध-कुशल और अकुशल मजदूरों को कुछ न देकर वे कुशल मजदूरों को घूस देने की नीति के पक्षपोषक बने रहे।

ए.एफ.एल. और रेलरोड, ब्रदरहुड के मजदूर नौकरशाह पूंजीपतियों के बुनियादी हितों के प्रति वफादार थे। वे मजदूरों द्वारा स्वतंत्र राजनीतिक कार्यवाही के विरुद्ध हमेशा सचेत रहते थे। उन्होंने एक तरह का अमरीकी किस्म का "अर्थवाद" विकसित कर लिया था जिनका किसी भी किस्म का मजदूर राजनीतिक कार्यक्रम नहीं था। इसी के साथ ही वे पूंजीवादी पार्टियों के एजेण्ट थे। इस सबने मजदूर वर्ग के राजनीतिक हितों को बहुत ज्यादा नुकसान पहुंचाने का कार्य किया।

ए.एफ.एल. की दूसरी मुख्य बात यह थी कि वह अकुशल मजदूरों विशेषतौर पर नीग्रो मजदूरों को संगठित होने से रोकता था। इसके लिए वह तरह-तरह के हथकण्डे अपनाता था। उसने समूचे नीग्रो लोगों को पूरी तौर पर मालिकों, बड़े भू-स्वामियों और गोरे नस्लवादियों की दया पर छोड़ दिया था।

गोम्पर्सपंथियों की नीति का सारतत्व वर्ग -सहयोग था। इसका मतलब मजदूरों पर पूंजीपतियों की वर्ग अधीनता थी। इस नीति को नेशनल सिविल फेडरेशन के संगठन में देखा जा सकता है। गोम्पर्स के नेतृत्व की मदद से नागरिक फेडरेशन के संगठन की स्थापना, मजदूर वर्ग के विरूद्ध मालिकों के हमलों का एक चरण था, जो 1900 के बाद और अधिक घातक होता गया। हमले का दूसरा चरण कई बड़े नियोक्ता संगठनों द्वारा "ओपेन शॉप" स्थापित करने का बड़ा अभियान था।
"ओपेन शॉप" को यदि ठीक-ठाक कहा जाय तो यह यूनियन-विरोधी शॉप थी। यूनियनों को तहस-नहस करने के इस अभियान को न्यायालयों का पूरा समर्थन प्राप्त था। ये न्यायालय एक के बाद दूसरे श्रम कानून को रद्द कर रहे थे और हड़तालियों के प्रत्येक समूह को कड़े उपायों से रोकते थे।

इसी आम परिस्थिति के मध्य में, 1900-1901 में सोशलिस्ट पार्टी अस्तित्व में आयी। यूजीन डेब्स की सामाजिक जनवादी पार्टी और डे लियोन विरोधी हिलक्विट गुट (समाजवादी लेबर पार्टी) और कुछ अन्य छोटे-छोटे ग्रुपों को मिलाकर यह पार्टी अस्तित्व में आयी थी।

सोशलिस्ट पार्टी ने एक हद तक डे लियोन के संकीर्णतावाद से छुटकारा पा लिया था। वे वर्ग-संघर्ष के तूफान में कूद पड़े थे। वे सभी हड़तालों में सक्रिय हो गये। इन वर्षों के दौरान सोशलिस्ट जुझारू कार्यकर्ताओं ने स्वतंत्र राजनीतिक कार्यवाइयों के लिए, औद्योगिक यूनियनवाद के लिए, असंगठितों के संगठन के लिए और ज्यादा प्रभावशाली हड़ताल की रणनीति के लिए संघर्ष किया। लेकिन हिलक्विट और उसके सहयोगी अवसरवादियों ने ट्रेड यूनियनों के प्रति अपनी "तटस्थता" की नीति विकसित की हुई थी। उनकी तटस्थता की नीति का मतलब था कि ए.एफ.एल.की यूनियनों के भीतर कोई संघर्ष न किया जाय, कि मजदूरों को पूंजीवादी प्रभाव में रहने दिया जाय और गोम्पर्स जैसे गलत व भ्रष्ट नेताओं के विरुद्ध सभी संघर्ष रोक दिये जायें। इसके परिणाम स्वरूप, ए.एफ.एल. के 1904 के सम्मेलन में कोई समाजवादी प्रस्ताव नहीं पेश किया गया।

ए.एफ.एल. के भ्रष्ट और पतित पूंजीवाद समर्थक नेतृत्व के विरोध में बढ़ रहे गुस्से को इण्डस्ट्रियल वर्कर्स ऑफ द वर्ड (industrial Workers of the world) के गठन में अभिव्यक्ति मिली। यह 1905 में शिकागो में गठित किया गया था। इस नये संगठन का मकसद मजदूर आंदोलन को एक नये, समाजवादी आधार पर पुनर्स्थापित करना था। इसका स्वरूप औद्योगिक यूनियनवाद का था और इसके तरीके आर्थिक और राजनीतिक दोनों क्षेत्रों में जुझारू संघर्ष के थे और इसका लक्ष्य पूंजीवादी व्यवस्था का उन्मूलन था।

आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. (Industrial Worker of the World) दोहरे यूनियनवाद का वामपक्ष था। यह अपने उद्भव से ही समाजवादी यूनियन थी। इसके मुख्य संस्थापक डेब्स, डे लियोन और हेवुड अपने को मार्क्सवादी कहते थे। आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. की स्थापना ने देशभर के वामपंथियों को समाजवादी पार्टी के अंदर एकजुट कर दिया। लेकिन समाजवादी पार्टी का दक्षिणपंथी नेतृत्व आई.डब्ल्यू. डब्ल्यू. का पूरी ताकत के साथ विरोध करता था।

यद्यपि 1905 में अपनी स्थापना के समय आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. मोटे तौर पर समाजवादी था। लेकिन इसके तुरत बाद इसमें अराजकतावादी-संघाधिपत्यवादी, राजनीति-विरोधी दिशा विकसित होना शुरू हो गयी। 1908 के इसके सम्मेलन में "राजनीतिक धारा"हटा दी गयी। इसके बाद इस संगठन ने आम हड़ताल, तोड़फोड़, और "सीधी कार्यवाही" के अन्य तरीकों पर अपनी निर्भरता बढ़ा दी। यह आने वाले वर्षों में अधिकाधिक मार्क्सवाद-विरोधी अवस्थिति अपनाने लगा। आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. के संघाधिपत्यवादी कदम ने इसे राजनीतिक समाजवादियों से अलग कर दिया।

आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. की संघाधिपत्यवाद की ओर जाने की कई कारकों से व्याख्या की जा सकती है। इसमें विदेश में पैदा हुए दसियों लाख मजदूरों की मताधिकार से वंचित होने की स्थिति, ए.एफ.एल. और समाजवादी पार्टी के नेताओं की अवसरवादी नीति से

मजदूरों में असंतोष, अमरीका के राजनीतिक जीवन में मौजूद व्यापक भ्रष्टाचार और सचेत अराजकतावादी तत्वों का दूसरे देशों से आगमन, इत्यादि शामिल हैं। जैसा कि पहले कहा गया है कि ऐसी ही शक्तियों ने मिलकर 1880 के दशक में पारसन्स के शिकागो आंदोलन में अराजकतावादी-संघाधिपत्यवाद को जन्म दिया था। डे लियोनवाद का लम्बे समय से प्रभाव एक और महत्वपूर्ण तत्व था जिसने संघाधिपत्यवाद को आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. में पैदा किया था। सही बात तो यह है कि डे लियोन द्वारा आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. को अंततः त्याग देने के बाद भी वह संयुक्त राज्य अमरीका में अराजकतावादी-संघाधिपत्यवाद का विचारधारात्मक पिता था।

आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. ने युद्ध पूर्व के काल में कई महत्वपूर्ण और कठिन लड़ाइयां लड़ी। इन लड़ाइयों में इसके जुझारू कार्यकर्ताओं को बर्बरतापूर्वक कुचला गया। इस दौरान आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. सर्वहारा वर्ग की अजेय, लड़ाकू भावना का ही प्रतीक बन गया था।

आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. अत्यंत तीखी लड़ाइयों में विजयी हुई, आधी विजयी हुई। इसकी ट्रेड यूनियनों की समाजवादी पार्टी के विरुद्ध टकराने की विनाशकारी नीति, इसके द्वारा आम हड़ताल का हर हमेशा इस्तेमाल, धार्मिक प्रश्न को इसके द्वारा गलत तरीके से हल करने की कोशिश ("लॉरेन्स में कोई भगवान नहीं, कोई मालिक नहीं" का नारा), इसका अराजकतावादी विकेन्द्रीकरण जो इसे किसी ठोस संगठन बनने से रोकता था, तोड़-फोड़ के साथ इसको देखा जाना, इसकी स्वतःस्फूर्तता में निर्भरता और इसका संकीर्णतावाद पर जोर इत्यादि इसके विकास में अंततः घातक सिद्ध हुई।

इसी दौरान, सोशलिस्ट पार्टी का तेजी से विकास हुआ। आठ मार्च, 1908 को समाजवादी महिलाओं ने मतदान के अधिकार के लिए न्यूयार्क के ईस्ट साइड में प्रदर्शन आयोजित किया। यही तारीख बाद में अंतर्राष्ट्रीय महिला मजदूर दिवस हो गयी। समाजवादी अखबारों की शृंखला निकलने लगी।

प्रथम विश्व युद्ध के पहले के दशक में नीग्रो मुक्ति आंदोलन का पुनर्जागरण का होना एक बड़ी विशेषता थी। जिम क्रो कानूनों की समूची शृंखला ने दक्षिण के नीग्रो लोगों को अर्द्ध-भूदासता की स्थिति में धकेल दिया था। दक्षिण में नीग्रो लोगों के भू-स्वामित्व में तेजी से गिरावट हो गयी थी और कू-क्लक्स-क्लान आतंकवाद का पुनर्जन्म हो गया था। नीग्रो लोगों पर हो रहे दमन व उत्पीड़न के विरुद्ध नीग्रो लोगों में 1905 में नियाग्रा आंदोलन का संगठन किया गया जिसका नेतृत्व प्रसिद्ध विद्वान डब्ल्यू.ई.बी.डू बोइस कर रहे थे।

लेकिन समाजवादी पार्टी के निम्न पूंजीवादी नेतृत्व ने नीग्रो लोगों के दमन के मुद्दे पर गलत अवस्थिति अपनायी। इससे वह नीग्रो मजदूरों से दूर हो गयी।

आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. से अलग होकर मार्च, 1912 में उत्तरी अमरीका की संघाधिपत्यवादी लीग गठित हुई। यह आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू.की दोहरी यूनियनवाद की नीति को गलत समझती थी। उत्तरी अमरीका की संघाधिपत्यवादी लीग कोई मार्क्सवादी आधार पर गठित संगठन नहीं था। यह संघाधिपत्यवादी थी। यह आम हड़ताल, औद्योगिक यूनियनवाद, तोड़फोड़, संसदवाद विरोधी, राज्यवाद- विरोधी, सैन्यवाद-विरोधी व धार्मिकता-विरोध की हिमायत करती थी और आक्रामक लड़ने की नीति की पक्षधर थी।

अपने गलत संघाधिपत्यवादी कार्यक्रम के कारण 1914 में लीग समाप्त हो गयी।

इस समूचे दौर में सोशलिस्ट पार्टी में मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवियों का प्रभुत्व बरकरार रहा। लेकिन समाजवादी लेबर पार्टी (डे लियोन के नेतृत्व में) कभी भी लड़ाकू पार्टी नहीं रही थी। इसके विपरीत आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. और समाजवादी पार्टी के वामपंथी हिस्से ने गोम्पर्स नौकरशाही के विरुद्ध लड़ाई लड़ी, औद्योगिक यूनियनवाद के लिए अनथक उद्वेलन किया तथा सबसे कठिन लड़ी जा रही हड़तालों की अगुवाई की।

समाजवादी पार्टी के दक्षिणपंथ में बर्नस्टीन के संशोधनवाद का असर शुरू से था। लेकिन जब प्रथम विश्व युद्ध की शुरूवात से दूसरे इण्टरनेशनल की गद्दारी सामने आ गयी तब संयुक्त राज्य अमरीका की समाजवादी पार्टी के दक्षिणपंथ ने शुरूवाती शांतिवादी अवस्थिति को त्यागकर अमरीकी पूंजीपति वर्ग की युद्ध मशीन का हिस्सा बनना स्वीकार कर लिया।

चूंकि प्रथम विश्व युद्ध यूरोप में शुरू हुआ था, इसलिए अमरीकी पूंजीपति वर्ग ने तटस्थ रहकर यह देखने की नीति अपनायी कि प्रतिद्वंद्वी साम्राज्यवादी एक दूसरे को नष्ट कर दें। लेकिन ए.एफ.एल. के नेता पूंजीपतियों के सुर में सुर मिलाते हुए भी मजदूरों की हड़तालों को रोकने की कोशिश करके अपने आकाओं से एक कदम और आगे चले गये। जब अमरीका युद्ध में शामिल हो गया तो ए. एफ.एल. की गोम्पर्स मशीन अमरीकी साम्राज्यवाद की युद्ध तंत्र का हिस्सा हो गयी। गोम्पर्स खुद राष्ट्रीय सुरक्षा के श्रम सम्बंधी सलाहकार आयोग की कमेटी का अध्यक्ष हो गया। वह 1919 में वर्साई में हुए शांति सम्मेलन में गया जहां मजदूर वर्ग के दुश्मनों ने इसे महान "मजदूर राजनेता" के तौर पर सराहा।

गोम्पर्स नौकरशाहों द्वारा साम्राज्यवादियों की सबसे बड़ी सेवा यह थी कि उन्होंने मजदूरों के संगठित होने और हड़ताल करने के युद्धकालीन प्रयासों को बाधित किया। ए.एफ.एल.और रेलरोड ब्रदरहुड नेताओं ने हड़ताल करने के अधिकार को त्याग दिया।

जबकि आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. ने शुरू से ही प्रथम विश्व युद्ध के विरुद्ध अवस्थिति अपनायी और वे उस पर साहस पूर्वक कायम रहे। लेकिन वे युद्ध के राजनीतिक पहलू पर कोई ध्यान दिये बगैर अपना मुख्य जोर आर्थिक संघर्षों की ओर लगाये रहे। इस दौरान उन्होंने कई महत्वपूर्ण हड़तालों का नेतृत्व किया।

इसी दौरान, 1915 में इण्टरनेशनल ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग का गठन किया गया। लेकिन यह कभी भी अपनी जड़ें नहीं जमा पाया क्योंकि यह मूलतया राजनीति विरोधी था, इसने औद्योगिक यूनियनवाद का समर्थन किया और युद्ध का विरोध किया। इण्टरनेशनल ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग की शिकागो शाखा ने शिकागो फेडरेशन ऑफ लेबर का समर्थन हासिल करके आक्रामक तरीके से यूनियनीकरण का तरीका अपनाया। युद्धकालीन दौर में इस संगठन की सबसे बड़ी उपलब्धि पैकिंग हाउस अभियान थी जिसमें

इन्होंने पैकिंग के दो लाख मजदूरों में से बीस हजार मजदूरों को राष्ट्रीय पैमाने पर संगठित कर लिया था। यह नीग्रो मजदूरों की सबसे बड़ी संगठित आबादी थी जो उस समय तक शायद दुनिया में कहीं नहीं थी। इससे समूचे मजदूर आंदोलन में जोश भर गया और शिकागो फेडरेशन ऑफ लेबर और इसके वामपंथी धड़े की मजदूर आंदोलन के भीतर प्रतिष्ठा बहुत ज्यादा बढ़ गयी।

इण्टरनेशनल ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग के शिकागो ग्रुप का युद्धकालीन दूसरा सबसे बड़ा कार्यभार राष्ट्रीय स्टील उद्योग को संगठित करना था। यह मजदूर आंदोलन का सबसे कठिन कार्यभार था। गोम्पर्स के तोड़फोड़, मालिकों की हिंसा और सरकार के दमन के बावजूद संगठनकर्ता देश के सभी बड़े स्टील केन्द्रों के 2.5 लाख मजदूरों को एकताबद्ध करने में कामयाब हो गये थे। लेकिन फण्ड की कमी के चलते यह राष्ट्रीय हड़ताल टल कर युद्ध के बाद हुई। हालांकि यह हड़ताल हारी गयी लेकिन इसने मालिकों को 12 घंटे के दिन और सातों दिन के सप्ताह के काम को खत्म करने को विवश कर दिया। इसके साथ ही मजदूरी और काम की स्थितियों में कई सुधार जीते गये। 1919 की स्टील हड़ताल ने यह सिद्ध कर दिया कि इस पूरे तौर से ट्रस्टीकृत उद्योग में कम्पनियों के यूनियनीकृत उद्योग में भी संगठन किया जा सकता है। इस हड़ताल ने शिकागो ग्रुप की इस धारणा को भी पुष्ट कर दिया कि बड़ी यूनियनों के भीतर रहकर व्यापक मजदूरों को गोलबंद किया जा सकता है और दोहरे यूनियनवाद से सिर्फ व्यापक मजदूरों से अलग-थलग रहने की ही राह बनती है।

प्रथम विश्वयुद्ध में अमरीकी साम्राज्यवादियों के युद्ध में उतरते ही अमरीकी सरकार ने वामपंथियों पर दमन तेज कर दिया। आई.डब्ल्यू.डब्ल्यू. को सबसे अधिक दमन का शिकार होना पड़ा। इसके साथ ही समाजवादी पार्टी को भी दमन और गिरफ्तारियां झेलनी पड़ी। वामपंथियों के विरुद्ध युद्धकालीन आतंकवाद साम्राज्यवादी युद्ध का पहला फल था जिससे वे "दुनिया को जनवाद के लिए सुरक्षित कर सकें।"

इस युद्ध में संयुक्त राज्य अमरीका वास्तविक पूंजीवादी विजेता था। डॉलर ने पाउण्ड और मार्क को पराजित कर दिया था। गुरूत्वकेन्द्र यूरोप से अमरीका की ओर आ चुका था। साम्राज्यवादी वालस्ट्रीट विश्वव्यापी पूंजीवादी प्रभुत्व के अपने अभियान में चल निकला था। प्रथम विश्वयुद्ध ने अगले विश्वयुद्ध के बीज बो दिये थे।

II

प्रथम विश्व युद्ध के बाद मजदूर आंदोलन

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान रूसी अक्टूबर क्रांति ने विश्वव्यापी पैमाने पर अपना प्रभाव डाला। इसने जहां साम्राज्यवादी शक्तियों को प्रथम समाजवादी देश पर हमला करके उसे नष्ट करने की कोशिशों में लगाया, वहीं इसने दुनिया भर के मजदूर वर्ग और उत्पीड़ित राष्ट्रों को अपने मुक्ति संघर्ष को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया।

इसका प्रभाव अमरीका में भी पड़ा। अमरीका की साम्राज्यवादी सरकार ने अपनी सेनायें साइबेरिया और उत्तरी रूस में हस्तक्षेप करने के लिए भेज दीं। इस समूचे हस्तक्षेप का उद्देश्य सोवियत सत्ता को उखाड़कर वहां पूंजीवादी प्रतिक्रियावाद को पुनर्स्थापित करना था।

दूसरी तरफ, महान अक्टूबर क्रांति ने अमरीकी मजदूरों और मेहनतकश जन समुदाय के बीच संघर्ष करने की भावना और जोश का तीव्र संचार किया। जगह- जगह बड़ी-बड़ी मीटिंगें रूसी क्रांति के समर्थन में होने लगीं।

लेकिन अमरीकी सामाजिक-जनवाद के अवसरवादी नेताओं ने अपने किस्म के यूरोपीय सहयोगियों की तरह रूसी क्रांति के प्रति बिल्कुल भिन्न दृष्टिकोण अपनाया। ए.एफ.एल. के नेताओं ने शुरू से ही क्रांति की भर्त्सना की। ए.एफ.एल. ने अपने 1919 के सम्मेलन में रूस की सोवियत सरकार को समर्थन देने से इंकार कर दिया। बाद के सम्मेलनों में वे और ज्यादा कुत्सा प्रचार पर जोर-शोर से उतर आये।

सोशलिस्ट पार्टी के वामपंथी धड़े ने हिलक्विट गुट के रूसी क्रांति के प्रति रुख को चुनौती दी और रूसी क्रांति को दुनिया के मजदूर आंदोलन को आगे बढ़ाने का बहुत बड़ा राजनीतिक कदम बताया। इसी वामपंथी धड़े से आगे कम्युनिस्ट आंदोलन का जन्म हुआ था। 1919 में ही सोशलिस्ट पार्टी में फूट पड़ गयी। 1919 और 1921 के बीच दो कम्युनिस्ट पार्टियां-कम्युनिस्ट लेबर पार्टी और कम्युनिस्ट पार्टी-अस्तित्व में आ गयीं। 1921 में दोनों पार्टियां मिलकर एक हो गयीं।

इसी दौरान मजदूरों के बीच काम को आगे बढ़ाने के लिए ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग की स्थापना की गयी। राष्ट्रीय स्टील हड़ताल की पराजय के बाद शिकागो के कुछ जुझारू सदस्यों और नेताओं ने इसकी स्थापना की थी। यह अपने पूर्ववर्ती संगठनों-एस.एन.एल.ए. और आई.टी.यू.ई.एल.की तरह संघाधिपत्यवादी नहीं थी। यह रूसी क्रांति और लेनिन की रचनाओं से प्रेरित होकर बनी थी। हालांकि यह 1920 में अस्तित्व में आयी थी, लेकिन 1922 की शुरूवात के पहले ट्रेड यूनियनों के बीच वास्तविक ताकत बनकर नहीं आ सकी थी।

ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग (टी.यू.ई.एल.) एक व्यापक वामपंथी- प्रगतिशील लोगों के मोर्चे के रूप में विकसित हो गयी। समूचे देश के जुझारू मजदूर जो गोम्पर्सवाद से बेजार थे, तेजी के साथ इसके कार्यक्रम में रुचि लेने लगे।

1922 में ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग ने बदनाम लैंडिस बिल्डिंग ट्रेड्स एवार्ड के विरुद्ध यूनियन के बड़े प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। इसी वर्ष राष्ट्रीय कोयला हड़ताल में एक जिले के नेता द्वारा हड़ताल को तोड़ने के प्रयास को इसने विफल कर दिया। लीग के सदस्य राष्ट्रीय रेलरोड शॉपमेन्स की हड़ताल में सफल रहे।

ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग लगातार ट्रेड यूनियनों को मिलाकर औद्योगिक यूनियनों में संगठित करने के प्रयासों में लगी हुई थी। इसके साथ ही ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग ने एक लेबर पार्टी के गठन के लिए और सोवियत रूस को मान्यता दिलाने के लिए देशव्यापी अभियान छेड़ रखा था। इन तीनों अभियानों को एकीकृत करके चलाने से लीग बहुत रफ्तार के साथ आगे बढ़ी।

ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग ने ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी थी कि ए.एफ.एल.की नौकरशाही मशीन सीधे टक्कर में आ गयी। उसने यूनियनों के मिलने (Amalgamation) को "कम्युनिस्ट" कहकर इसकी निंदा की। 1923 में हुए सम्मेलन में इस मसले पर उन्होंने मतदान कराने से या बहस कराने से इंकार कर दिया। लेबर पार्टी के प्रस्ताव को "गैर-अमरीकी" कह कर उसे मतदान में पराजित कर दिया गया। सोवियत रूस को मान्यता के लिए प्रस्ताव को व्यापक समर्थन मिल गया था।

ए.एफ.एल. के इस सम्मेलन से ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग तथा मजदूर आंदोलन के उनके सभी मित्रों और समर्थकों पर हिंसक हमले के संकेत मिल चुके थे।

इसके पहले 1919 में कम्युनिस्ट पार्टी पर अमरीकी सरकार हमले कर चुकी थी। बढ़ते आर्थिक और राजनीतिक संघर्षों के बीच कम्युनिस्ट आंदोलन का यहां जन्म हुआ था। पूंजीपति वर्ग इन बढ़ते संघर्षों से भयभीत था। पूंजीपतियों ने लोगों के अधिकारों को कुचलने के लिए राज्यसत्ता का गैर कानूनी तरीके से इस्तेमाल किया। 1919 के अंत में कुख्यात पाल्मर छापेमारी का पूरा इस्तेमाल कम्युनिस्ट पार्टियों के विरुद्ध किया गया।

पुलिस ने कम्युनिस्ट लेबर पार्टी के दफ्तर में छापा मार कर पार्टी नेतृत्व को गिरफ्तार कर लिया। रूसी क्रांति की वर्षगांठ के अवसर पर जनसभा में हमला करके सैकड़ों मजदूरों को गिरफ्तार किया गया। जनवरी, 1920 में 70 शहरों में छापामार मजदूरों को उनके घरों से घसीटा गया और उनको जेलों में ठूंस दिया गया। इस कार्यवाही को एटार्नी जनरल ए.मिशेल पाल्मर और उसके खुफिया जे.एडगर हूबर द्वारा रचा गया था। उन्होंने कानून और संवैधानिक अधिकारों की धज्जियां उड़ाते हुए देश के क्रांति की दहलीज पर देश का हवाला देते हुए 10,000 लोगों की गिरफ्तारियां की। दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों के नेताओं को जेल में ठूंस दिया गया। सरकार ने विदेशों में पैदा हुए मजदूरों के साथ सबसे खराब सलूक किया। युद्धकालीन डिपोर्टेशन एक्ट के जरिये 500 से ज्यादा विदेशियों को तुरतफुरत देश से बाहर कर दिया गया। इस दमन से दोनों कम्युनिस्ट पार्टियों को स्वतंत्र भाषण की स्वतंत्रता और इकट्ठा होने की स्वतंत्रता के बुनियादी अधिकारों से वंचित कर दिया गया। उनके राष्ट्रीय मुख्यालयों को बंद करने के लिए बाध्य किया गया।

5 मई, 1920 को निकोला सैक्को और बार्तोलोगियू वैंन्जेटी की गिरफ्तारी फर्जी मुकदमे में की गयी। वे अराजकतावादी थे और विदेश में पैदा हुए थे। उन पर डकैती और गार्ड की हत्या का झूठा मुकदमा चलाया गया। मुक्दमे के प्रहसन को जल्दी से निपटाकर उनको फांसी की सजा दी गयी।

23 अगस्त, 1927 को उनको फांसी दी गयी। इसके विरोध में दुनिया भर में और अमरीका के कई शहरों में बड़े-बड़े प्रदर्शन हुए। सैक्को-वैंजेटी की हत्या शासक वर्ग द्वारा किया गया अत्यंत तीखा प्रहार था।

इसी प्रकार, अगस्त, 1922 में कम्युनिस्ट सम्मेलन के संदर्भ में 57 कम्युनिस्ट नेताओं को गिरफ्तार किया गया। इनकी गिरफ्तारी के विरोध में और इनका मुकद्मा लड़ने के लिए मजदूर सुरक्षा परिषद का गठन किया गया। बहुत बाद में, 1934 में इस मुकदमे को वापस लिया गया।

ट्रेड यूनियन एजूकेशन लीग और वर्कर्स पार्टी (उस समय की कम्युनिस्ट पार्टी) मिलकर मजदूर वर्ग की ट्रेड यूनियनों पर आधारित लेबर पार्टी बनाने की कोशिश लगातार कर रहे थे। इसके लिए लम्बे समय तक एक व्यापक अभियान चलाने के बावजूद सफलता नहीं मिली।

महामंदी से पहले का समय संयुक्त राज्य अमरीका के औद्योगिक विस्तार और पूंजीवादी समृद्धि का समय था। काल्विन कोलिज (अमरीकी राष्ट्रपति) के "समृद्धि" काल के दौरान अमरीकी साम्राज्यवाद आक्रामक तरीके से विस्तारवादी और प्रतिक्रियावादी था। इसकी आम लूट-खसोट की भावना सेना और नौसेना के हथियारों में वृहद पैमाने पर बढ़ोत्तरी में, कैरिबियाई और मध्य अमरीकी देशों में बार-बार सैनिक हमलों में, डास और यंग योजनाओं के जरिये जर्मनी में सिलसिलेवार घुसपैठ में, सोवियत संघ के प्रति हिंसक दुश्मनी में और "खुले द्वार" नीति की चाल के जरिये चीन के भीतर दखलंदाजी करने में व्यक्त होती थी। इसके साथ यह घरेलू मोर्चे पर मजदूर यूनियनों को कुचलने में, कम्पनी यूनियनवाद को बढ़ावा देने इत्यादि में व्यक्त होती थी।

इस काल के दौरान संयुक्त राज्य अमरीका के बड़े पूंजीपतियों का केन्द्रीय आर्थिक लक्ष्य उत्पादन की रफ्तार को तेज करना था। इसके लिए वे मजदूरों की क्षमता की सीमा तक उनका शोषण करने का लक्ष्य रखते थे। उनका मकसद युद्ध के बाद के विश्व बाजार की मालों की बेशुमार मांग को संतुष्ट करना था और इसके लिए वे कम से कम पूंजी लगाना चाहते थे। यूरोप को पूंजी निर्यात की मांग बहुत ज्यादा थी। इसलिए रफ्तार तेज करने या जैसा कि वे इसे कहते थे " उद्योग का तर्कसंगतीकरण" (Rationalisation of Industry) इन वर्षों के दौरान अमरीकी पूंजीपतियों के लिए महामंत्र हो गया।

उद्योग के तर्कसंगतीकरण के केन्द्र में बड़े पैमाने के उत्पादन की व्यवस्था थी। असेम्बली लाइन की इसकी चारित्रिक विशिष्टता के चलते इसने कुशल कामों की भारी मात्रा में कमी करके उसे लाइन में सामान्य मजदूरों को दे दिया। इससे संयत्र का समूचा स्वरूप ही बदल गया। 1920 के दशक में पूंजीपतियों ने मजदूरों को और तेज काम करने की ओर धकेला और व्यापक पैमाने की उत्पादन प्रणाली में उन्हें असहाय बना दिया।

मजदूरों पर रफ्तार बढ़ाने की चाहत को लागू करने के लिए मालिकों के लिए यह आवश्यक था कि वे मजदूरों के प्रतिरोध को कुचल दें। उनके इस काम में ए.एफ.एल. और रेलरोड यूनियन के शीर्ष नेता मदद के लिए आगे आ गये। 1924 में गोम्पर्स की जगह विलियम ग्रीन ए.एफ.एल. के नेतृत्व में आ गया। वह पूंजीपतियों के लिए और बड़ा सेवक सिद्ध हुआ। जब कम्पनियां खुद यूनियन बना रही थीं, तो ए.एफ.एल.ने 1927 के सम्मेलन में घोषित किया कि कंपनी यूनियन जो कुछ कर सकती हैं उससे बेहतर और प्रभावशाली तरीके से करने के लिए ट्रेड यूनियन मशीनरी विकसित कर सकती है। यूनियन-प्रबन्धन सहयोग अधिक बुनियादी और प्रभावशाली है इसकी तुलना में प्रबन्धन के साथ सहयोग करने के लिए कर्मचारियों का प्रतिनिधित्व कम प्रभावशाली होगा।

मजदूर नौकरशाही की नयी दिशा बाल्टीमोर और ओहियो योजना में व्यक्त हुई जिसने काम की रफ्तार को आगे बढ़ाने के लिए वर्ग-सहयोग को और ज्यादा घनीभूत कर दिया था। जब 1922 में रेलरोड के शॉपमेन्स की हड़ताल पराजित हो गयी तो पराजित शॉपमेन पर यह योजना लादी गयी। इस योजना का सारतत्व यह था कि मजदूर मालिकों के साथ ज्यादा काम करने के लिए सहमत होंगे, इससे बढ़ी हुई मजदूरी और ज्यादा नियमित रोजगार की शक्ल में वे वास्तविक फायदा अपने आप उठायेंगे।

ए.एफ.एल. के इस वर्ग-सहयोगी अभियान में सोशलिस्ट पार्टी के लोग भी शामिल हो गये।

रफ्तार बढ़ाने के "तर्कसंगतीकरण" योजनाओं और मजदूर आंदोलन के मनोबल को गिराने के लिए कोलिज काल में अमरीकी साम्राज्यवाद ने "समृद्धि के भ्रमों" की समूची शृंखला खड़ी कर दी। इससे वे मजदूरों में काफी बड़े पैमाने पर भ्रम पैदा करने में कामयाब भी हो गये। वे मजदूरों में औद्योगिक शेयर खरीदकर पूंजीपति बनने का भ्रम फैला रहे थे। इस समृद्धिकाल में उन्होंने दावा किया कि संयुक्त राज्य अमरीका गरीबी खत्म करने के कगार पर है। उनकी इन सब बातों का मतलब था कि पूंजीवाद अपने स्वाभाविक प्रक्रिया के विकास में समाजवाद की ओर जा रहा है। इनके प्रचारक यह दावा करने लगे कि संयुक्त राज्य अमरीका में पूंजीवाद, यूरोप के पूंजीवाद से भिन्न है और इसने अपने आंतरिक अंतर विरोधों को हल कर लिया है और कि यह अब जनवादी हो गया है। यह अंतहीन विकास और व्यापक समृद्धि की ओर जा रहा है। उन्होंने इसका नाम "नया पूंजीवाद" दिया।

यूरोप के सामाजिक-जनवादियों ने इसको यह कहना शुरू किया कि अब हम पूंजीवादी संगठित अर्थव्यवस्था में पहुंच रहे हैं जहां स्वतंत्र प्रतियोगिता और बाजार की अंधी शक्तियों की पकड़ के युग को दूर कर दिया गया है। हिल्डफरिंग और कार्ल काउत्स्की इसी लाइन को प्रचारित कर रहे थे।

ए.एफ.एल. और रेलरोड ब्रदरहुड के उच्च नेता इस अभियान में शामिल होकर मजदूर वर्ग को विचारधारात्मक तौर पर कमजोर करने में लगे थे। इनके नेता खुद भी व्यापार में बड़े पैमाने पर उतर पड़े। इन्होंने मजदूर बैंक, बीमा कम्पनियां और निवेश के कारोबार में बड़े पैमाने पर कदम उठाये। 1925 तक 36 लेबर बैंक अस्तित्व में आ चुके थे। यह ट्रेड यूनियन पूंजीवाद था।

वैसे तो ए.एफ.एल. और रेलरोड ब्रदरहुड के सर्वोच्च नेताओं में भ्रष्टाचार पहले से था लेकिन कोलिज के समृद्धि काल में यह बहुत ज्यादा बढ़ गया था। कई मजदूर नेताओं को पूंजीपतियों ने अपने निजी निदेशक के बतौर इस्तेमाल किया था। पूंजीपतियों द्वारा हड़ताल तोड़ने के लिए इसके साथ ही गुण्डों और हथियारबंद गिरोहों का इस दौरान उपयोग बढ़ गया था।

कम्युनिस्ट और ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग भंयकर दमन के बावजूद ए.एफ.एल. नेतृत्व के घातक वर्ग-सहयोगी कार्यक्रम को लागू करने के विरुद्ध प्रत्येक जगह पर लड़े। वे फैक्टरियों में, यूनियन हालों में, ट्रेड यूनियनों के चुनाव में और हड़ताल की पिकेट कतारों में सभी जगह लड़ रहे थे।

इसी दौरान ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग ने तीन उद्योगों की बड़ी हड़तालों का नेतृत्व किया। ये उद्योग टेक्सटाइल, नीडिल ट्रेड्स और खनन के थे। इन सभी हड़तालों को व्यापक संयुक्त मोर्चे के आधार पर चलाया गया था। इन उद्योगों की हड़तालों से मजदूर वर्ग में व्याप्त निराशा का माहौल कमजोर हुआ। इसके बावजूद, ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग का इस दौर में प्रभाव कमजोर था और यह व्यापक मजदूरों से एक हद तक अलगाव में थी।

1929 में ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग को पुनर्गठित करके ट्रेड यूनियन यूनिटी लीग कर दिया गया। इसका केन्द्रीय नारा" वर्ग के विरुद्ध वर्ग" का था।

ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग से इसका बड़ा फर्क यह था कि जहां एजूकेशनल लीग पुरानी यूनियनों के भीतर ही काम करती थी, वहीं यूनिटी लीग असंगठितों को औद्योगिक यूनियनों में संगठित करने पर जोर देती थी। उस समय वर्कर्स पार्टी (कम्युनिस्ट पार्टी) में यह महसूस किया जा रहा था कि ए.एफ.एल. और नेशनल रेडरोड यूनियन के वर्ग-सहयोगी रुख के चलते और इनमें व्याप्त भ्रष्टाचार व पतन के कारण इन दोनों में काफी गिरावट आ गयी है और मजदूर वर्ग इनसे दूर होता जा रहा है। लेकिन अभी भी ये ट्रेड यूनियन आंदोलन के लड़ाकू संगठन बने हुए हैं। ऐसी परिस्थिति में, सिर्फ इनके भीतर काम करने से ही काम नहीं चलेगा। इसके लिए जरूरी होगा कि इससे बाहर रह गये असंगठित मजदूरों को संगठित करने की ओर बढ़ा जाय। दूसरी बात यह थी कि ट्रस्ट्रीकृत बड़े उद्योगों में ऐसे मजदूरों की भारी संख्या थी, जिनको ए.एफ.एल. संगठित नहीं कर रही थी वह सिर्फ उनके कुशल मजदूरों को संगठित करती थी। इसलिए इन ट्रस्ट्रीकृत उद्योगों के अंसगठित मजदूरों को स्वतंत्र मजदूर यूनियनों में संगठित करने की आवश्यकता थी। तीसरी सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि कम्युनिस्टों और ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग के सदस्यों व समर्थकों को ए.एफ.एल से निष्कासित किया जा रहा था। इन सब कारणों के चलते ट्रेड यूनियन एजूकेशनल लीग के स्थान पर ट्रेड यूनियन यूनिटी लीग का गठन किया गया।

ट्रेड यूनियन यूनिटी लीग के गठन के ठीक बाद अमरीका के शेयर बाजार में भारी संकट आ गया और महामंदी का दौर शुरू हो गया। इस महामंदी ने जो अक्टूबर, 1929 में अमरीकी शेयर बाजार में भारी गिरावट से शुरू हुई थी, अमरीकी साम्राज्यवाद के

प्रचारकों की सारी हवा निकाल दी कोलिज काल की समृद्धि के दावों का और अंतरविरोधहीन अमरीकी पूंजीवाद के दांवों की कलई सबके सामने उजागर हो चुकी थी।

लेकिन "अमरीकी अपवादवाद" (American Exceptionalism) और अमरीकी समृद्धि तथा 'अंतरविरोधों से मुक्त अमरीकी पूंजीवाद' के पूंजीवादी प्रचारकों का प्रभाव वर्कर्स पार्टी (कम्युनिस्ट पार्टी) के नेतृत्व पर भी पड़ा था। इस महामंदी के फूट पड़ने के ठीक पहले वर्कर्स पार्टी के नेतृत्व के एक हिस्से ने "अमरीकी अपवादवाद" का प्रचार करना शुरू कर दिया। अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर इन दो विचारों के बीच तीखा संघर्ष शुरू हो गया। यह संघर्ष कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की छठवीं कांग्रेस में बहस का बिंदु बना। अमरीकी अपवाद वाद के मूल सवाल के बारे में स्टालिन ने कहा, "अमरीकी पूंजीवाद की विशिष्ट विशेषताओं को नजरअंदाज करना गलत होगा। कम्युनिस्ट पार्टी को अपने कामों में इसको ध्यान में रखना चाहिए। लेकिन यह और भी गलत बात होगी कि कम्युनिस्ट पार्टी इन विशिष्ट लक्षणों को ही अपनी गतिविधियों का आधार बनाये, क्योंकि अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी सहित प्रत्येक कम्युनिस्ट पार्टी को पूंजीवाद के आम लक्षणों पर अपने को आधारित करना चाहिए जो सभी देशों के लिए एक जैसे ही हैं, न कि किसी खास देश के विशिष्ट लक्षणों को अपना आधार बनाना चाहिए" इसके बाद कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की कई कम्युनिस्ट पार्टियों के प्रतिनिधियों से बने आयोग ने "संयुक्त राज्य अमरीका की कम्युनिस्ट पार्टी के संबोधन" में "अमरीकी अपवादवाद" पर अपनी अवस्थिति स्पष्ट कर दी। इसने कहा, "अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी में दक्षिणपंथी गलती का विचारधारात्मक उत्तोलक "अपवादवाद" का तथाकथित सिद्धान्त है जिसकी स्पष्टतम अभिव्यक्ति कामरेड पेप्पर और लोवस्टोन में मिली है, जिनकी धारणा निम्नलिखित है; "पूंजीवाद का संकट, लेकिन अमरीकी पूंजीवाद का नहीं; जन-समुदाय का वामपंथ की ओर झुकाव, लेकिन अमरीका में नहीं, दक्षिणपंथी खतरे के विरुद्ध संघर्ष करने की आवश्यकता, लेकिन अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी में नहीं।"

आर्थिक महामंदी (1929-33) के दौर में भारी पैमाने पर मजदूर और गरीब किसान वास्तविक भुखमरी के कगार पर पहुंच गये थे। पूंजीपति बड़े पैमाने पर अपने उत्पादों को नष्ट कर रहे थे। भट्टियों की आग को जलाने के लिए अनाज का इस्तेमाल किया जा रहा था। कपास को खेतों में ही जोत दिया जा रहा था। जानवरों को नष्ट किया जा रहा था। और इसी समय लोग भुखमरी के शिकार हो रहे थे।

इस संकट से ए.एफ.एल. का नेतृत्व भौचक्का था और उसका मनोबल गिरा हुआ था। मूर्खतापूर्ण पूंजीवादी स्वप्न उनके सामने ही धूल-धूसरित हो गया था। लेकिन इस विनाश से मजदूरों को बचाने की उन्होंने कोई योजना नहीं बनायी। इसके विपरीत उन्होंने अमरीकी सरकार की मजदूरी में कटौती करने की नीति का समर्थन और बेरोजगारी बीमा और अन्य सब्सिडी की मजदूरों की मांग का विरोध किया। इसी तरह, समाजवादी पार्टी ने भी राष्ट्रपति हूबर की इन नीतियों का समर्थन किया।

लेकिन इस दौरान, कम्युनिस्ट पार्टी और ट्रेड यूनियन यूनिटी लीग ने बेरोजगारों के प्रदर्शन का नेतृत्व किया। उन्होंने नीग्रो लोगों की मांगों के लिए, मजदूरी में कटौती के विरोध में, फासीवाद और युद्ध के विरोध में तथा बेरोजगारी राहत और बीमा के लिए मार्च, 1930 में बड़ा राष्ट्रव्यापी बेरोजगारों का प्रदर्शन आयोजित किया।

इस संकट के काल में ट्रेड यूनियन यूनिटी लीग के नेतृत्व में सबसे महत्वपूर्ण हड़ताल पिट्सबर्ग क्षेत्र में कोयला मजदूरों की हड़ताल थी। यह बहुत विकट लड़ी जाने वाली हड़ताल थी। मजदूरों को व्यापक दमन का सामना करना पड़ा। यह हड़ताल चार महीने तक चली। हालांकि यह हड़ताल कुचली गयी। इसी प्रकार ट्रेड यूनियन यूनिटी लीग ने कृषि मजदूरों की हड़तालों की अगुवायी की। बेरोजगारों और मजदूरों की विभिन्न हड़तालों में कई लोग मारे गये और बहुतों को लम्बी-लम्बी सजायें मिली।

इसी दौरान, कम्युनिस्ट पार्टी ने दक्षिण में अपना आधार बनाया। उन्होंने नीग्रो लोगों की लड़ाइयों में हिस्सा लिया। बुजुर्ग पूर्व सैनिकों के मार्च में हिस्सा लिया।

1932 के चुनाव में फ्रेंकलिन रूजवेल्ट राष्ट्रपति का चुनाव जीत गये। मार्च, 1933 में रूजवेल्ट ने सत्ता संभाली। जून में उसने राष्ट्रीय औद्योगिक पुनरुद्धार अधिनियम लागू किया। रूजवेल्ट ने इसे "**न्यू डील**" (New Deal) की अपनी योजना के हिस्से के बतौर लागू किया। "न्यू डील" ने अमरीका के आर्थिक जीवन में संघीय सरकार की दखलंदाजी को और ज्यादा बढ़ा दिया तथा उसका (संघीय सरकार) अत्याधिक केन्द्रीकरण कर दिया। उसने यह सब निम्न विशिष्ट उद्देश्यों के लिए किया।

(1) अमरीका की छिन्न-भिन्न वित्तीय बैंकिंग प्रणाली का पुर्ननिर्माण,

(2) गिरते हुए कारोबार को बड़े कर्जों और सब्सिडी देकर बचाना।

(3) निजी पूंजी निवेश को गति प्रदान करना

(4) कम एकड़ में खेती करके और फसलों को नष्ट करके कृषिगत अति उत्पादन में काबू पाना।

(5) स्फीतिकारी प्रवृत्तियों को लागू करके गिरी हुई कीमतों को बढ़ाना।

(6) फार्म और घर मालिकों को उनकी सम्पत्ति की गिरवी होने से रक्षा करना।

(7) सार्वजनिक कार्यों की स्थापना के जरिये जन-समुदाय की क्रयशक्ति को बढ़ाने को गति देना और रोजगार निर्मित करना।

(8) भुखमरी के शिकार बेरोजगारों के लिए कम से कम राहत तो मुहैय्या कराना।

रूजवेल्ट द्वारा न्यू डील को जुझारू हो रहे जन समुदाय के गुस्से को शांत करने के एक उपाय के बतौर अपनाया गया था। इसका अधिकांश हिस्सा कीन्स के विचारों पर आधारित था जिसका कहना था कि यदि अपने एकाधिकारवादी चरण में पूंजीवाद आत्म

संचालित आर्थिक प्रणाली के रूप में काम करना बंद कर देता है तो उसे या तो उद्योग में सीधे सरकारी हस्तक्षेप और सब्सिडी देने की नीति अपनानी होगी नहीं तो वह निराशाजनक बर्बादी में गिर जायेगा।

राष्ट्रपति रूजवेल्ट पूंजीवादी व्यवस्था का खुला समर्थक था और उसने ये सारे कदम अमरीकी साम्राज्यवाद की एकाधिकारी पूंजी के हित में उठाये।

लेकिन इन कदमों के चलते मजदूरों और बेरोजगारों के संघर्ष और तेज हो गये। मजदूरों को सामूहिक सौदेबाजी के अधिकार के मिलते ही 1934-36 के दौरान संघर्षों का सिलसिला तेज हो गया।

यहां यह भी गौरतलब है कि जब समूचे यूरोप में फासिस्ट आंदोलन तेजी से बढ़ रहा था, हिटलर 1933 में सत्ता में आ गया था और उसने जर्मनी में मजदूर आंदोलन को बुरी तरह से कुचल देने में पूरी ताकत लगा दी थी। वहीं अमरीका में रूजवेल्ट की "न्यू डील" ने फासिस्ट आंदोलन को बढ़ने से रोकने में भूमिका निभायी थी। इसको रोकने में मजदूर आंदोलन और अन्य फासिस्ट विरोधी आंदोलनों की बहुत बड़ी भूमिका थी।

1933 से ही हड़ताल आंदोलन ट्रस्ट्रीकृत उद्योगों में फैलता जा रहा था। इन उद्योगों में हड़तालों तथा बेरोजगारों के आंदोलनों में लगातार बढ़ोत्तरी हो रही थी। 1934 में जहां हड़ताल में भाग लेने वाले मजदूरों की संख्या 14 लाख 66 हजार 995 थी वहीं 1936 में 7 लाख 88 हजार 648 मजदूरों ने हड़तालों में हिस्सा लिया था। इसमें सबसे महत्वपूर्ण सैनफ्रांसिसको की आम हड़ताल थी जिसमें एक लाख 27 हजार मजदूरों ने हिस्सेदारी की थी। यह चार दिन की आम हड़ताल 1934 में हुई थी और इसने समूचे अमरीकी मजदूर आंदोलन को व्यापक गति दी थी। यह अमरीकी मजदूर आंदोलन के इतिहास में गौरवशाली घटनाओं में एक थी।

न्यू डील के शुरूवाती दो वर्षों के दौरान करीब दस लाख मजदूर ए.एफ.एल. की यूनियनों में शामिल हो गये। ये ज्यादातर मजदूर अकुशल और विदेशों में पैदा हुए मजदूर थे। 1935 में ट्रेड यूनियन यूनिटी लीग ए.एफ.एल. में शामिल हो गयी।

1935 में ही सी.आई.ओ. (Committee of Industrial organisation) का गठन किया गया। इसमें शुरू में विभिन्न उद्योगों की यूनियनों के करीब 10 लाख सदस्य थे। इसने शुरू से ही बुनियादी ट्रस्ट्रीकृत उद्योगों के पूर्णतया अंसगठित मजदूरों को यूनियनों में संगठित करने का उद्देश्य अपने सामने रखा था। सी.आई.ओ. का गठन आठ ए.एफ.एल. की उन यूनियनों ने किया था जो या तो औद्योगिक या अर्द्ध-औद्योगिक आधार पर बनी यूनियनें थीं। इसके गठन से ए.एफ.एल.ने क्षुब्ध होकर इसकी निंदा की और 1936 में आठों यूनियनों को निलम्बित कर दिया। इसे उन्होंने ए.एफ.एल. के विरुद्ध दोहरे यूनियनवाद और विद्रोह की संज्ञा दी थी। लेकिन इससे ए.एफ.एल. में फूट पड़ गयी।

न्यू डील के इन शुरूवाती वर्षों के दौरान तरह-तरह के जनवादी आंदोलनों की भी बाढ़ सी आ गयी।

1935 में ही कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की सातवीं कांग्रेस हुई जिसमें जार्जी दिमित्रोव ने फासिज्म के विरुद्ध एक व्यापक संयुक्त मोर्चे की बात की और इसके आधार के बतौर मजदूर वर्ग की व्यापक एकता को रखा गया था। संयुक्त राज्य अमेरिका में फासिज्म के विरुद्ध लड़ने के लिए उन्होंने संयुक्त मोर्चे के बतौर मजदूर-किसान पार्टी को व्यापक आधार पर खड़ा करने की हिमायत की। उन्होंने "पूंजीवादी राष्ट्रवाद" के खतरे से अमरीकी मजदूरों को आगाह कराया।

चूंकि न्यू डील के वर्षों के दौरान बुनियादी उद्योगों के मजदूर अधिकाधिक यूनियनीकृत हो रहे थे, इससे पूंजीपति बौखला उठे और वे राष्ट्रपति से इन मजदूर आंदोलनों को कुचलने की अधिकाधिक मांग करने लगे। अब मजदूर पूंजीपतियों की मजदूर यूनियन न बनने देने की "ओपेन शॉप" नीति पर ही प्रहार कर रहे थे, इसलिए वे अपनी हिंसक यूनियनवाद-विरोधी नीति की पराजय मान रहे थे और इसके लिए वे रूजवेल्ट को दोष दे रहे थे।

न्यू डील के वर्षों के दौरान मजदूरों और बेरोजगारों को कुछ अधिकार मिले। इन अधिकारों का पूंजीपति वर्ग का एक हिस्सा विरोध कर रहा था। 1936 के चुनाव में राष्ट्रपति पद पर फिर से रूजवेल्ट चुने गये। इनके इस चुनाव में ए.एफ.एल.,सी.आई.ओ. और नेशनल रेलरोड ब्रदरहुड ने समर्थन किया था। कम्युनिस्ट पार्टी ने भी रूजवेल्ट को सशर्त समर्थन दिया।

सी.आई.ओ.के गठन के बाद अमरीकी मजदूर आंदोलन द्वारा तब तक के यूनियनों के गठित करने के प्रयासों में सर्वाधिक तेजी आयी। खदानों, स्टील मजदूरों और ऑटोमोबाइल मजदूरों को संगठित करने में सी.आई.ओ. ने पूरी ताकत लगा दी। इसने बड़ी-बड़ी जुझारू हड़तालों को संगठित किया। 44 दिनों की जनरल मोटर्स कारपोरेशन की हड़ताल में मजदूरों की एकजुटता फौलादी थी और यह हड़ताल विजयी रही। इसी प्रकार क्रिसलर कारपोरेशन के विरुद्ध 63,000 मजदूरों की हड़ताल विजयी रही। इसके बाद तो ऑटोमोबाइल उद्योग में यूनियनीकरण की प्रक्रिया छलांग लगा कर आगे बढ़ी।

ऑटोमोबाइल के बाद स्टील उद्योग में यूनियनीकरण की प्रक्रिया को गति मिली। स्टील उद्योग के मालिकों ने अपना हिंसा का परम्परागत तरीका अपनाया। मई, 1937 में उन्होंने 75 हजार मजदूरों की हड़ताल को तोड़ दिया। मालिकों द्वारा की गयी हिंसा में दस मजदूर मारे गये और सौ से अधिक घायल हुए।

लेकिन इसके बाद विभिन्न अन्य उद्योगों में मजदूरों को संगठित करने के जुझारू और सफल अभियान शुरू हो चुके थे। हालांकि ए.एफ.एल. के नेताओं ने इन अभियानों को असफल करने की कोशिश की, लेकिन वे इसमें नाकामयाब रहे।

इन वर्षों के दौरान सी.आई.ओ. को बनाने में बड़ी सफलता का मुख्य कारण मजदूरों की उच्च स्तर की एकजुटता और उनकी लड़ने की भावना में था। इन गुणों को बढ़ाने में कम्युनिस्टों की अहम् भूमिका थी। मजदूरों की कतारों में, बेरोजगारों में, नीग्रो लोगों में, विदेश में पैदा होने वाले लोगों में, महिलाओं और नौजवानों में उत्साह परवान चढ़ रहा था।

कम्युनिस्ट पार्टी ने बुनियादी, असंगठित उद्योगों में नयी औद्योगिक यूनियनों की स्थापना करने के सी. आई.ओ. के कार्यक्रम का पूरे तौर पर समर्थन किया था। इसकी दृष्टि में सी.आई.ओ. हर दृष्टि से व्यापक जन आंदोलन था।

स्टील वर्कर्स को संगठित करने के दौरान नीग्रो और विदेशों में पैदा हुए मजदूरों को संगठित किया गया। ये मजदूर बड़े पैमाने पर स्टील उद्योग में थे। सी.आई.ओ. का नेतृत्व कम्युनिस्टों का इस्तेमाल तो संगठन के विस्तार में कर रहा था, लेकिन वह स्टील जैसे महत्वपूर्ण उद्योग में अपना नियंत्रण रखना चाहता था। इसलिए वह सचेत तौर पर उनको मुख्य नेतृत्वकारी पदों से हर इलाके में अलग-थलग रखता था। दूसरा, यह कम्युनिस्ट नेतृत्व की भी गलती थी कि वे खुद यूनियनों के भीतर क्रांतिकारी तो दूर की बात है, प्रगतिशील नेतृत्व भी विकसित करने का कोई प्रयास नहीं कर रहे थे।

ऑटोमोबाइल उद्योग में कम्युनिस्ट बहुत पहले से कार्य कर रहे थे। जब 1935 में यूनाइटेड ऑटोमोबाइल वर्कर्स के मांगपत्र में अंतर्राष्ट्रीय यूनियन की मांग रखी गयी थी तो ए.एफ.एल. को इसे स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ा था। जब 1935 के अंत में यू. डब्ल्यू.ए., ए.एफ.एल. को छोड़कर सी.आई.ओ. का हिस्सा बन गयी तो उनके इस कार्य में वामपंथियों की केन्द्रीय भूमिका थी। यहां पर यू.डब्ल्यू. ए. को सी.आई.ओ. में बनाये रखने के लिए उन्हें नेतृत्व का हिस्सा बनाना जरूरी था। स्टील उद्योग से अलग ऑटोमोबाइल उद्योग ने खुद अपना नेतृत्व विकसित किया था।

दूसरे उद्योगों में भी कम्युनिस्ट बहुत तेजी के साथ औद्योगिक यूनियनों को संगठित करने में आगे बढ़ गये। 1940 तक कम्युनिस्टों का सी.आई.ओ. के नेतृत्व पर काफी मजबूत प्रभाव था। सी.आई.ओ. के भीतर कम्युनिस्ट प्रभाव इसके पार्टी सदस्यों द्वारा निभाई गई औपचारिक भूमिका से काफी बढ़कर था। इस दौरान, सी.आई.ओ. ने यूनियनों की लड़ाई को जुझारू तरीके से लड़ा।

लेकिन ए.एफ.एल. और सी.आई.ओ. के शीर्ष नेताओं ने बाद में कम्युनिस्टों पर यह आरोप लगाया कि वे ट्रेड यूनियन आंदोलन पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहते थे और कि वे उसे यहां तक कि तोड़ देना चाहते थे।

ऐसे आरोप हास्यास्पद थे। बात इसके उल्टी थी। कम्युनिस्ट पार्टी की गलती यह थी कि सी.आई.ओ. में अपनी पूरी ताकत झोंक देने के बावजूद उसने मजदूरों के बीच से कम्युनिस्ट कार्यकर्ताओं की कतार नहीं खड़ी की थी। उसने व्यापक मजदूर-मेहनतकश आबादी से अपने अलगाव को तोड़ा था, लेकिन उनका यह जनाधार पूंजीवादी जनाधार था। व्यापक मजदूर आबादी ट्रेड यूनियन चेतना पर ही खड़ी थी। ट्रेड यूनियन चेतना अपने आप में पूंजीवादी चेतना ही होती है।

इसलिए ए.एफ.एल.और सी.आई.ओ. का सर्वोच्च नेतृत्व कम्युनिस्टों का इस्तेमाल अपनी यूनियनों के विस्तार में तो करता था लेकिन जैसे ही उनको लगता था कि कम्युनिस्ट पार्टी नेतृत्वकारी स्थिति में आ जायेगी तो वे उनके विरुद्ध व्यापक कुत्सा प्रचार अभियान में लग जाते थे।

इससे भी बड़ा भटकाव उस समय कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में यह दृष्टिकोण था कि वे सी.आई.ओ. के शीर्ष नेतृत्व के प्रगतिशील चरित्र को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर देखते थे। उस समय कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव अर्ल ब्राउडर थे जो सी.आई.ओ. के शीर्ष नेताओं की भूरि-भूरि प्रशंसा यह कह कर करते थे कि वे अमरीकी मजदूर आंदोलन के महानतम नेता थे। जबकि वास्तविकता यह थी कि इन नेताओं ने जो उस समय प्रगतिशील भूमिकायें निभायी थी वह उनके अवसरवाद पर आधारित थी। जब किसी भी तरफ से ऐसा अवसर आता था तो वे तत्काल अपनी "प्रगतिशीलता" का लबादा उतार फेंक देते थे। वस्तुतः उनकी "प्रगतिशीलता" महज सतही थी।

कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में यह भटकाव महज मजदूर आंदोलन के संबंध में ही नहीं था। उसकी समग्र कार्यदिशा में यह भटकाव मौजूद था। जब रूजवेल्ट प्रशासन ने लातिन अमरीकी देशों के प्रति पहले की हमलावर नीति से "अच्छे पड़ोसी की नीति" ("Good Neighbour Policy") अपनायी तो ब्राउडर ने कहा कि इस नीति का चरित्र साम्राज्यवादी नहीं है और इसलिए लातिन अमरीका के लोगों को राष्ट्रपति रूजवेल्ट पर भरोसा करना चाहिए। यह खतरनाक अवस्थिति थी जो पूंजीवाद-जनित भ्रमों के सामने आत्म समर्पण करती थी। इसका स्पष्ट मतलब लातिन अमरीकी लोगों से यह मांग करने का था कि वे अमरीकी साम्राज्यवाद की आक्रामक ताकत के प्रति अपनी सतर्कता न बरतें।

इसी प्रकार, फासिज्म विरोधी युद्ध में जब संयुक्त राज्य अमरीका कूद गया तो कम्युनिस्ट पार्टी ने हिटलर के फासिज्म के विरोध के नाम पर अपनी पूरी ताकत राष्ट्रपति रूजवेल्ट के पीछे झोंक दी थी। वह अपनी स्वतंत्र अवस्थिति छोड़ चुकी थी। उसने सर्वहारा विचाराधारा का आत्मसमर्पण कर दिया था।

अमरीकी कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव के बतौर अर्ल ब्राउडर ने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान घोर अवसरवाद का परिचय दिया था। ब्राउडर के अवसरवादी विचारों के केन्द्र में "अमरीकी अपवादवाद" की परम्परा थी। यह ऐसा भ्रम था जो अमरीका के पूंजीवाद को बुनियादी तौर पर भिन्न मानता था जिसमें अन्य देशों में पूंजीवाद को संचालित करने वाले विकास और पतन के नियम काम नहीं करते। अमरीकी पूंजीवाद के विकास की सापेक्ष अनुकूल स्थिति के चलते-सामंती राजनीतिक अतीत की अनुपस्थिति, व्यापक प्राकृतिक संसाधनों पर इसका नियंत्रण, एक विस्तृत एकीकृत भू-भाग का क्षेत्र और अपने बाद के वर्षों में अपनी रणनीतिक स्थिति के कारण विश्व युद्धों से मुनाफा कमाने की इसकी सामर्थ्य, जो दूसरे पूंजीवादी देशों को बर्बाद कर रहे थे-उसने दुनिया में बढ़ती पूंजीवादी कमजोरी के सामने बड़ी शक्ति के तौर पर बने रहने का परिचय दिया था। लेकिन इसी को लोवस्टोन और ब्राउडर ने अमरीकी पूंजीवाद का विशिष्ट लक्षण बताया था। "अमरीकी अपवादवाद" की यह धारणा ब्राउडर के पूरे राजनीतिक दृष्टिकोण का केन्द्र थी।

"अमरीकी अपवादवाद" की सभी धारणाओं की तरह ब्राउडर की अवसरवादी योजना अमरीकी पूंजीवाद की ताकत को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर आंकती थी। उसकी तेहरान थिसिस यह स्पष्ट तौर पर दिखाती थी कि अमरीकी एकाधिकारी समूचे विश्व को संचालित

कर रहे हैं। उसने अमरीकी साम्राज्यवादियों की विश्व प्रभुत्व की अवधारणा को स्वीकार कर लिया था। अमरीकी साम्राज्यवादियों के "अमरीकी शताब्दी" के लेखक हेनरी ल्यूस ने उसकी इतनी शानदार व्याख्या नहीं की थी जितनी कि अर्ल ब्राउडर ने की थी। तेहरान में, दिसम्बर, 1943 में रूजवेल्ट, स्तालिन और चर्चिल ने एक बुनियादी तौर पर सैनिक समझौता किया था जिसमें पश्चिमी मोर्चा खोलने की रणनीति और उससे जुड़े मसलों पर निर्णय लिये गये थे। लेकिन कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव अर्ल ब्राउडर ने इससे यह निष्कर्ष निकाला कि यह युद्ध के बाद उभरने वाली दुनिया के लिए शांति की गारण्टी होगी। ब्राउडर ने बाद में लिखा कि पूंजीवाद और समाजवाद ने एक ही दुनिया में शांतिपूर्ण सह अस्तित्व और सहयोग के लिए रास्ते की शुरूवात कर दी है। उसने तर्क दिया कि "बड़े तीन" की युद्ध के बाद की एकता चर्चिल और रूजवेल्ट द्वारा स्टालिन को दिये इस आश्वासन पर आधारित है कि सोवियत संघ को शांतिपूर्ण तरीके से विकसित होने के लिए छोड़ दिया जायेगा और स्टालिन द्वारा चर्चिल व रूजवेल्ट को दिये इस आश्वासन पर आधारित है कि विजयी लाल सेना बाकी यूरोप पर संगीनों के बल पर सोवियत व्यवस्था और समाजवाद को नहीं लागू करेगी। इससे आगे जाकर ब्राउडर ने यह निष्कर्ष निकाला कि "डर और संदेह" की पुरानी धारणायें इस तरह समाप्त हो गयी हैं और वस्तुतः विश्व सहयोग स्थापित हो गया है।

ब्राउडर के अवसरवाद का एक बड़ा तत्व कीन्सवाद में था। उसने यह निष्कर्ष निकाला कि संयुक्त राज्य अमरीका में सरकारी नियोजन द्वारा अति उत्पादन के संकट पर काबू पाया जा सकता है। इससे यह गलत निष्कर्ष निकलता था कि पूंजीवाद अपने आम संकट को समाप्त कर सकता है। ब्राउडर के ये विचार कीन्सवाद के 'प्रगतिशील पूंजीवाद' के भ्रम के चारित्रक लक्षण को व्यक्त करते थे। वह इस तरह की पूंजीवाद की तस्वीर पेश करता था कि मानो वह सबको संतुष्ट करते हुए विकासमान तरीके से आगे बढ़ता रहेगा। इससे वह समाजवाद के लिए जुझारू संघर्ष की आवश्यकता से ही इंकार करने की ओर जाता था। वह समूचे समाज को "समझदार पूंजीपतियों" के हाथों में रखने की सोचता था। इसके लिए मजदूर वर्ग की वह कोई क्रांतिकारी भूमिका नहीं देखता था और न ही वह कम्युनिस्ट पार्टी की कोई क्रांतिकारी भूमिका देखता था।

ब्राउडर की ये सारे विचार मार्क्सवाद-लेनिनवाद विरोधी थे।

कम्युनिस्ट पार्टी के अंदर तेहरान समझौते के बाद आये भटकाव वस्तुतः सामाजिक-जनवादी भटकाव थे। ये कम्युनिस्ट पार्टी को पूंजीपति वर्ग की दुम बना देते थे।

यही कारण है कि अपनी तमाम कुर्बानियों और मजदूर वर्ग के बीच लगातार काम करते रहने तथा उनके साथ घनिष्ठ सम्बंध होने के बावजूद संयुक्त राज्य अमरीका की कम्युनिस्ट पार्टी एक सशक्त क्रांतिकारी आंदोलन को द्वितीय विश्व युद्ध काल में नहीं खड़ा कर सकी।

कम्युनिस्ट पार्टी ने स्पेनी गृह युद्ध के दौरान हजारों स्वयंसेवक भेजकर वहां फासिस्टों के विरुद्ध संघर्ष में शानदार भूमिका निभायी थी। उसने संयुक्त राज्य अमरीका में नीग्रो लोगों के संघर्षों में और अन्य उत्पीड़ितों की लड़ाई में अपनी ताकत झोंक दी थी लेकिन अपनी बुनियादी गलत कार्य दिशा के चलते उसने इसे क्रांतिकारी जनाधार बनाने में अपनी सचेत भूमिका नहीं निभायी।

यही कारण है कि वह मजदूर आंदोलन में व्यापक हिस्सेदारी करने के बावजूद उसे ट्रेड यूनियन चेतना से आगे नहीं बढ़ा सकी।

कुल मिलाकर, द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति तक अमरीकी ट्रेड यूनियन आंदोलन और मजदूर वर्ग की पार्टी कम्युनिस्ट पार्टी की यही स्थिति बनी रही।

■■■